RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 03 प्रकाशन तिथि : 25 फरवरी कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 मार्च 2024

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

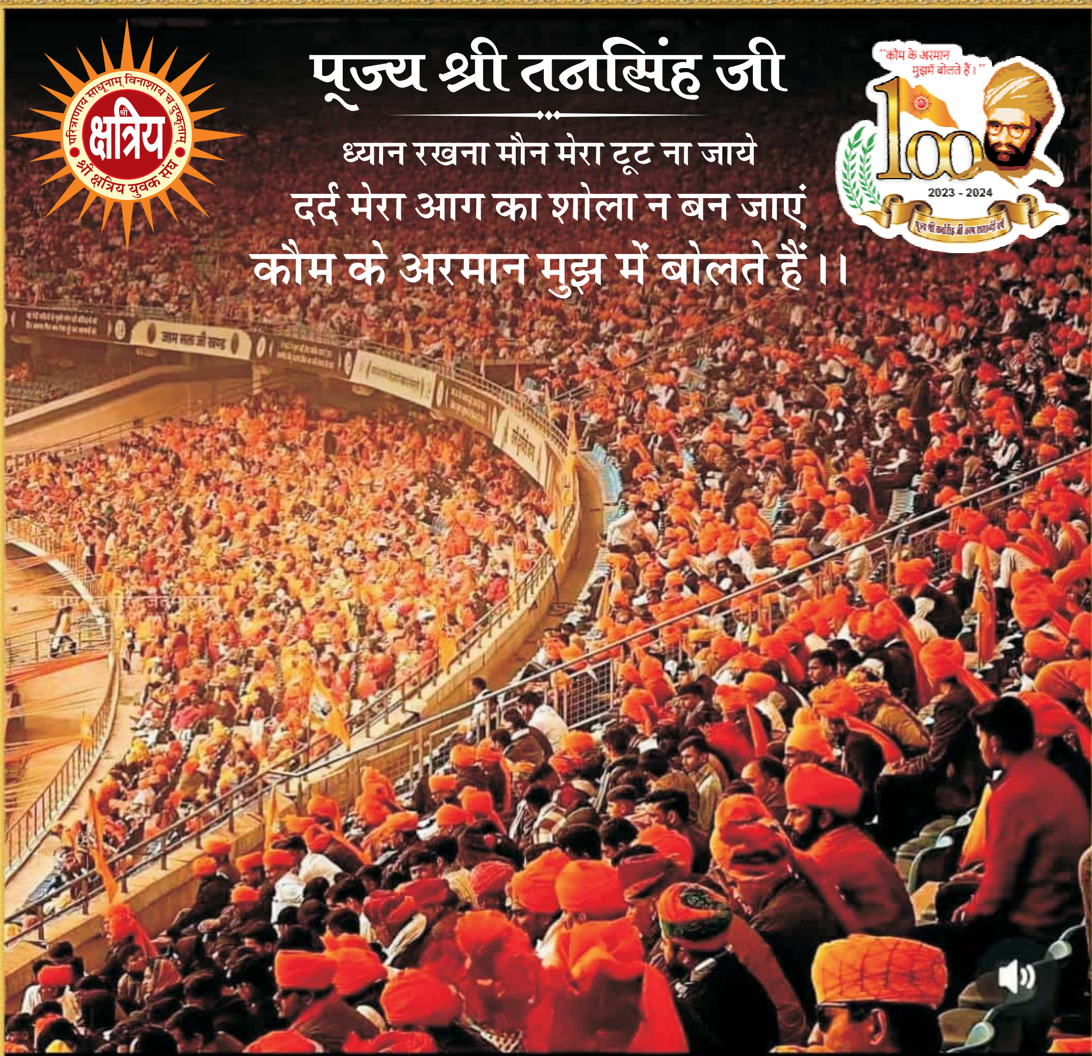

जैसलमेर सम्भाग के सहयोगियों की ओर से पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह में पधारे सभी समाज बन्धुओं बहुत बहुत धन्यवाद।।

तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली, भोजराज सिंह तेजमालता, महिपाल सिंह तेजमालता , शम्भू सिंह जिजनियाली, दलपत सिंह झिनझिनयाली
भवानी सिंह रावतरी , शैतान सिंह झिनझिनयाली, बाबू सिंह सोनू , स्वरूप सिंह नेडान, कंवराज सिंह सेतरावा , भवानी सिंह मुंगेरिया
खंगार सिंह झलोड़ा , नरेंद्र सिंह तेजमालता , सवाई सिंह सनावड़ा, अमर सिंह रामदेवरा, भेरू सिंह तिरसिंगड़ी, छतर सिंह ओसियां
रणजीत सिंह चौक, सुरेन्द्र सिंह पोछीणा 1st, अवतार सिंह तेजमालता , सवाई सिंह देवड़ा, देवी सिंह झलोड़ा, नगेंद्र सिंह संग्रामसर
अशोक सिंह भीखसर, नरपत सिंह लुणाखुर्द, भोपाल सिंह बैरसियाला, नवलसिंह झलोड़ा, लूणसिंह बड्डा , पप्पू सिंह बालाना
गिरधर सिंह जोगीदास गांव, शेर सिंह जोगीदास गांव, गोपाल सिंह बलाड़, घनश्याम सिंह बैरसियाला, बलवंत सिंह मुलाना
शम्भू सिंह फुलिया, सांवल सिंह मोढ़ा, छगन सिंह मोढ़ा, पुष्पेंद्र सिंह मोढ़ा, मैराज सिंह सांकड़ा, ईश्वर सिंह बैरसियाला 2nd,
सज्जन सिंह गजसिंह गांव, चतुर्भुज सिंह तेजमालता, लीलू सिंह साधना, समुन्द्र सिंह अभयपुरा, हरी सिंह, मान सिंह सनावड़ा,
ईश्वर सिंह बैरसियाला 1st,रतन सिंह बैरसियाला,पदमसिहं तेजमालता,मनोहर सिंह सांकड़ा,नटवर सिंह झिनझिनयाली ,पूर्ण सिंह बैरसियाला

संघशक्ति

4 मार्च, 2024

वर्ष : 61 अंक : 03

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क - एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

❍ प्रभात संदेश	✍ श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर	04
❍ समाचार संक्षेप	✍	05
❍ निर्मूल भय को छोड़कर सच्चे क्षत्रिय बने	✍ संरक्षक श्री	07
❍ कौम के इतिहास में आग बुझाने वालों में.....	✍ श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास	08
❍ आत्मीय जनों के सामाजिक भाव का वंदन....	✍ श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास	10
❍ क्षात्र धर्म और पूज्य श्री तनसिंह जी	✍	11
❍ श्रद्धेय श्री तनसिंह जी : मेरे प्रेरणा के स्रोत	✍ श्री बिशनसिंह खिरजां	20
❍ बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास	✍ श्री खींवसिंह सुलताना	22
❍ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍ श्री भंवरसिंह मांडासी	24
❍ तुलसी का भक्ति मार्ग	✍ आचार्य श्री रामचन्द्र शुक्ल	27
❍ आदर्श और अनूठे गाँव	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	31
❍ अपनी बात	✍	34

भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर–2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर द्वारा 24.05.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश

पिछले दिनों में आपने बौद्धिक और चर्चाओं में बहुत कुछ सीखा, जाना। क्षात्रधर्म का पालन शक्तिहीन व्यक्ति नहीं कर सकता। तो क्षात्रधर्म की साधना वस्तुतः शक्ति की साधना है, बल की साधना है। आपको बताया गया कि हम किस प्रकार से शक्ति का उपार्जन करते हैं, बाहुबल के रूप में, जनबल के रूप में, आत्मबल के रूप में, मनोबल के रूप में, यह सब बताया गया। ये सारी शक्तियाँ क्षात्रधर्म के पालन करने के लिए परम आवश्यक हैं।

ये जो शिक्षा आपको मिल रही है, ये संसार में और कहीं नहीं मिल सकेगी, इसकी महत्ता को जानने का प्रयत्न करें। संसार में कितना क्लेश है, कितना दुख है, यह हम देख रहे हैं लेकिन हम कुछ कर नहीं पा रहे हैं। एक द्रौपदी के चीरहरण पर महाभारत का युद्ध हुआ और अब तो रोज द्रौपदियों के चीर–हरण हो रहे हैं। हम क्या कर सकते हैं, हम क्या कर रहे हैं? लगता है हम भी कुछ नहीं कर रहे हैं। भीष्म की तरह से बैठे देख रहे हैं क्योंकि शक्तिहीन हैं। हम साधना कर रहे हैं लेकिन शक्ति मिली नहीं है।

पूरे राष्ट्र पर किस प्रकार का संकट मंडरा रहा है, विदेशी शक्तियां आज भी नजर रखती हैं, भारत को पद दलित करने के लिए। उनको हमको जवाब देना है बलवान बनकर, शिक्षावान बनकर, ज्ञानवान बनकर, धनवान बनकर। क्षत्रिय युवक संघ अपने कदम अपनी क्षमता के अनुसार बढ़ा रहा है और उसी ओर जा रहा है कि इस सनातन धर्म की रक्षा हो, राष्ट्र की रक्षा हो, मानवीय मूल्यों की रक्षा हो, मानव समाज की रक्षा हो, संसार का कल्याण हो। रोज यही बात हम करते हैं, सुनते हैं।

एहसास करें, यह हम ही को करना है और कोई नहीं कर पायेगा। कहीं ना कहीं आदमी आकर के किसी न किसी घेरे में उलझ जाता है। बहुत सारे संगठन हैं भारतवर्ष में जो भारतवर्ष का हित चाहते हैं, लेकिन मेरे दृष्टिकोण से उस हित की साधना नहीं कर पा रहे हैं। वो कहीं न कहीं अटके हुए हैं, कोई न कोई कुंठा है। कोई हिंदू–मुस्लिम की समस्या है, वहां आकर के रुक जाते हैं, कोई जात–पांत के घेरे में आकर के फंस जाता है, हमको ये सारे घेरे तोड़कर मानवता को एक संदेश देना है और वही संदेश आज क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से आज के मंगल प्रभात में हमको दिया जा रहा है।

●

समाचार संक्षेप

जन्म शताब्दी समारोह सम्पन्न :

25 जनवरी, 2023 से पूज्य तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष प्रारम्भ हुआ। उसी समय से निश्चित किया गया कि यह सौवां वर्ष जन्म शताब्दी समारोह के रूप में मनाया जाएगा। इसी निश्चय के अन्तर्गत पूरे वर्ष समारोह चलते रहे। पू. तनसिंह जी की देन श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय नये क्षेत्रों में भी पहुँचाया गया। संघ स्वयं में ही पूज्य तनसिंह जी का परिचय ही है अतः पूज्यश्री की पहचान नये क्षेत्रों में पहुँची। प्रचार-प्रसार हेतु जहाँ भी दल पहुँचे, समाज बन्धुओं ने बड़े प्रेम से संघ की बात सुनी और पसन्द की।

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम दिल्ली में पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह का समापन 28 जनवरी को हुआ। इससे पूर्व पूज्यश्री की जन्म तिथि 25 जनवरी, 2024 को उनकी 100वीं जयन्ती उत्साह पूर्वक अनेक स्थानों पर मनाई गई। जयपुर के संघशक्ति कार्यालय में शाम को जयन्ती कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम के पश्चात प्रांगण के बाहर शानदार दीपोत्सव का आयोजन हुआ। स्वयंसेवक तथा सहयोगी वर्ग सपरिवार उपस्थित रहे। बाड़मेर में तनसिंह सर्किल से मोटर साइकिल रैली का आयोजन रहा जो शहर के मुख्य मार्गों से गुजरी और जयन्ती का संदेश प्रसारित किया। चौहटन में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक समाज बन्धु उपस्थित रहे। मातेश्वरी शिक्षण संस्थान में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिल्ली में 28 जनवरी के लिए कार्यरत स्वयंसेवकों ने जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में जयन्ती मनाई। अलवर के पीपली में, चूरू के भुकरका में, नूंवा (रतनगढ़) में, दुर्गा महिला संस्थान सीकर में, केकड़ी में, टापरा में, जालोर के सुराणा में, फरीदाबाद के सेक्टर-8 में, सूरत के सरोली-मंडल में, पुणे के पिंपरी चिंचवड़ में, चित्तौड़गढ़ में, उदयपुर में, डूंगरपुर में, पाली प्रान्त में अनेक स्थानों पर, कल्याण छात्रावास सीकर में, अमर राजपूत छात्रावास नागौर में, आयुवान निकेतन कुचामन सिटी, चांधन में, देवीकोट में, बीकानेर में तथा अनेक अन्य स्थलों पर जयन्ती मनाई गई।

जन्मशताब्दी हेतु प्रचार-प्रसार के लिए राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तरप्रदेश और दिल्ली में अनेक गाँवों में सम्पर्क साधा गया। सभी जगह जो-जो मिले उन्होंने संघ की बात को सराहा, सम्पर्क वालों के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया। हरियाणा और उत्तरप्रदेश के क्षेत्रों में अलग-अलग समूह बनाकर यात्राएँ की गई। राजस्थान और गुजरात में स्थानीय स्वयंसेवकों ने सम्पर्क यात्राएँ की।

सम्पर्क अभियान को विस्तार देने के लिए दो संदेश यात्राएँ निकाली गई। पहली संदेश यात्रा संघ के स्थापना दिवस 22 दिसम्बर से पूज्य तनसिंह जी के जन्म स्थान व ननिहाल जैसलमेर जिले के बेरसियाला गाँव से प्रारम्भ हुई। जैसलमेर से बाड़मेर की अपनी यात्रा में बीच के जैसलमेर व बाड़मेर जिले के गाँवों में भी रुक-रुक कर सम्पर्क साधा। बाड़मेर में आलोक आश्रम में संघ के संरक्षक माननीय भगवानसिंह जी ने यात्रा का स्वागत किया। आगे जो नाम दिए जा रहे हैं, उनके बीच पड़ने वाले गाँवों में भी संदेश देते हुए आगे बढती रही। बाड़मेर से बालोतरा-सिवाना-जालोर-सिरोही-पाली-राजसमंद-नाथद्वारा-उदयपुर-चित्तौड़गढ़-भीलवाड़ा-आसीन्द-विजयनगर-भिनाय-केकड़ी-बूंदी-कुन्हाड़ी-केशोराय पाटन-सवाई माधोपुर-सपोटरा-कैलादेवी-करौली-सरमथुरा-बाड़ी-धौलपुर-भरतपुर-टोडाभीम-मेहंदीपुर बालाजी-बांदीकुई-दौसा-लालसोट- जामड़ोली आदि के बीच के गाँवों में भी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण देते हुए जयपुर पहुँची। जयपुर से- महहोली-नाथूसर मूंडरू-अजीतगढ़ - ढाणा सतनाली-भिवानी - हालुवास - कैरू-बापोड़ा-भिवानी-चरखी दादरी क्षेत्र-रोहतक-वजीरपुर-

गुरुग्राम-भौंडसी-सोहना-पलवल- करौली उत्तर प्रदेश क्षेत्र में प्रवेश-नूरपुर-करौला के बीच वाले गाँवों से होते हुए जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम दिल्ली पहुँची। 21 दिन की संदेश यात्रा लगभग 5000 किलोमीटर निकली तथा 500 गाँवों में निमंत्रण पहुँचाया।

दूसरी संदेश यात्रा 31 दिसम्बर, 2023 से, जोधपुर से प्रारम्भ हुई। यह यात्रा जोधपुर से नागौर शेखावाटी क्षेत्र में तथा आगे बीकानेर क्षेत्र में संदेश देने रवाना हुई। जोधपुर के संघ कार्यालय तनायन से- खींवसर-देऊ-नागौर-खरनाल-गोटन-मेड़ता-भैरूँदा- बिखरणिया-डेगाना-गच्छीपुरा-कालवा-मकराना-कुचामन-सांगलिया-सामी-दूजोद-सीकर-उदयपुरवाटी-धमोरा-झुंझुनू-टांई-बिसाऊ-चूरू-तारानगर-सरदारशहर-रतनगढ़-नुंआ-राजलदेसर-परसनेऊ-डूंगरगढ़-झंझेऊ-नापासर-बीकानेर-हाडलां-कोलायत-भेलू-फलौदी-टेपू-कालूपाबूजी-सगरा-केतु-शेरगढ़-बेलवा-भादुकलां-सरेचा व जोधपुर के बीच के गाँवों में संदेश पहुँचाते हुए जोधपुर पहुँची। 12 दिन की इस संदेश यात्रा ने 165 गाँवो में संदेश पहुंचाया।

28 जनवरी को दिल्ली में जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम केसरिया साफा धारण किए पुरुषों और केसरिया वस्त्र पहने महिलाओं से भर गया। राजस्थान व गुजरात से तो बड़ी संख्या में समाज बन्धु पहुँचे और अन्य प्रदेशों से भी अलग-अलग क्षेत्रों से प्रतीनिधि रूप में लोग पहुँचे। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा रहा था। स्टेडियम के बाहर भी LED वगैराह लगा दी गई थी इसलिए लगभग 25 हजार लोग तो बाहर ही रहे। दूर-दूर से दिल्ली पहुँचने के लिए 16 रेलगाडियाँ विशेष लगाई गई थी। 15 तो राजस्थान के दूरस्थ क्षेत्रों के लिए और एक मुंबई व पूना से आने वालों के लिए लगाई गई। गुजरात में कुछ लोग रेल से तो कुछ बसों से आए। राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र, शेखावाटी आदि क्षेत्रों से भी लोग बसों से पहुँचे। स्टेडियम को भी अच्छी तरह सजाया गया था। वीर क्षत्रियों और क्षत्राणियों के नाम से खण्ड बनाए गये थे। बसों से पहुँचने वालों के वाहन शहर से बाहर हरियाणा के गुड़गाँवा क्षेत्र में रोके गए थे और वहाँ से मेट्रो का सफर करते हुए स्टेडियम पहुँचे। मेट्रो के आनन्ददायक सफर का अनुभव उठाया गया। सभी जगह पर निर्देशित करने हेतु स्वयंसेवक दायित्व निभा रहे थे।

ठीक समय पर यज्ञ प्रारम्भ हुआ और यज्ञ के बाद प्रार्थना व गीत के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। वक्ताओं ने दिए गये समय के अनुसार अपनी बात कही। पूज्य तनसिंह जी को विनम्र श्रद्धांजलि के रूप में वाणी का प्रयोग किया तथा संगठित बनकर शक्ति अर्जन की बात सभी ने कही। वक्ताओं में सामाजिक तथा राजनैतिक हस्तियाँ थीं, सभी ने पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह के अनुरूप अपने विचार रखे। पूज्य तनसिंह जी द्वारा दिए गये मार्ग, विचार, दर्शन का विराट रूप स्टेडियम में स्पष्ट प्रकट हो रहा था। कार्यक्रम में समाज के अनेक प्रमुख लोग उपास्थित हुए। सामाजिक क्षेत्र, राजनैतिक क्षेत्र, उद्योग जगत से जुड़े अधिकारीगण बड़ी संख्या में कार्यक्रम में पहुँचे। वर्ष भर के कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने वाले सहयोगी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। देश भर से समाज बन्धु जुटे। दुबई से भी पहुँचे। सभी के चेहरों पर आनंद की रेखाएँ झलक रही थी। कार्यक्रम अत्यन्त व्यवस्थित तथा अनुशासित रूप से सम्पन्न हुआ जो अन्य प्रदेशों से आए समाज बन्धुओं की चर्चा का विषय बन गया। संघ का मार्ग जो पूज्य तनसिंह जी ने समाज के लिए दिया उस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए अन्य प्रदेशों से पहुँचे लोगों की माँग आने लग गई है। कार्य साधना माँगता है पर समाज की आवश्यकता है इसलिए इसकी माँग भी उठती रहेगी और कर्म को विस्तार भी देना पड़ेगा।

माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह में उद्‌बोधन –

निर्मूल भय को छोड़कर सच्चे क्षत्रिय बने : संरक्षक श्री

मेरे प्रिय आत्मीयजन! पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष का अब समापन हो रहा है। तनसिंह जी के बारे में बहुत कुछ बात हो गई हैं जिन्हें, दोहराने की आवश्यकता नहीं है। मुझे महाभारत का एक किस्सा याद आता है। जब महाभारत का युद्ध कौरव और पांडवों के बीच न होने के लिए जितने भी समझौते किए जाने थे, उनके लिए प्रयास हुए लेकिन युद्ध होना आवश्यक हो गया।

तब भगवान कृष्ण आखिरी बार हस्तिनापुर गए और उस समय वह अपनी बुआ कुन्ती के पास मिलने के लिए गए और कहा कि आपका अपने पुत्रों के लिए कोई संदेश हो तो वह मैं उनको जाकर बता दूँ। तब कुंती ने कहा कि जिस दिन के लिए क्षत्राणियां पुत्रों को जन्म देती हैं वह दिन आज आ गया है। उस दिन के लिए हमको भी तैयार रहना चाहिए। हमको भी सपूत की मौत मरने के लिए तैयार रहना चाहिए और जिस काम के लिए भगवान ने हमको जन्म दिया है उस काम को किए बिना कभी भी नहीं मरना है, यह हमारा संकल्प होना चाहिए। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि दीप की विशेषता इसी में है कि बुझने से पहले हजारों दीपक जला दे। तो तनसिंह जी ने तो यह काम कर दिया जो इस कौम को, इस राष्ट्र को, इस संस्कृति को बचाने के लिए किया जा सकता था उसकी पूरी विरासत हमको सौंप के गए हैं। हम उसको संभाल सके या नहीं, यह कौन सिद्ध करेगा? हम अपनी आत्मा से पूछें, कोई कमेटी बैठा कर के तय नहीं करना है। आत्म चिंतन करें। क्या भगवान ने जो सुकर्म करने के लिए जन्म दिया, मैं वह कर सका हूँ? यह चिंतन ही हमारे विकास का मार्ग निकालता है। यही मुक्ति का मार्ग निकालता है। व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि की बात पूज्य तनसिंह जी ने समझाई कि अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को समर्पित कर दें समाज के लिए और अपने घेरे को बड़ा कर दें, समाज की इच्छाओं को भी परमेश्वर को समर्पित कर दें, इस बात को हम नहीं समझ पाए।

अभी मैं दो-तीन दिन से यह बातें सुन रहा हूँ कि हमारे लोग बहुत डरपोक हो गए हैं। डरने लग गए हैं कि राजपूत इकट्ठे हो रहे हैं तो लोग कहीं हमको जान नहीं जाए कि यह क्यों इकट्ठे हो रहे हैं। हमको तो गर्व होना चाहिए कि हम सकारात्मक उद्देश्य के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। हम किसी का विनाश करने के लिए इकट्ठे नहीं हो रहे हैं। यह हमारा इतिहास भी बताता है। सारे समाज, विभिन्न जातियां जो हमारे साथ रही हैं, उनको यह भय नहीं है कि ये इकट्ठा क्यों हो रहे हैं। यह भय अंदर से हमारा निकल रहा है। इसीलिए मैं यह कहता हूँ कि इस वीर कौम को यह भय निकाल देना है, छोड़ देना है। यह निर्मूल भय है और इसको कोई दूसरा निकाल नहीं सकता। हम सब मिलकर के भी प्रयास करें तो भी नहीं निकल सकता। लेकिन आप में से जो इस प्रकार का चिंतन करते हैं या उनके चिंता हो जाती है, उनके लिए मैं भगवान से प्रार्थना कर सकता हूँ कि इनको थोड़ी शक्ति दें। जो दूसरों का त्राण करता है उसको भय किसका? वो भगवान की शरण में चला गया है तो फिर भगवान से ही डरने लग गए हम। ऐसा सोच हमारा नहीं होना चाहिए। इस भय को निकाले बिना हम सच्चे क्षत्रिय भी नहीं बन पाएँगे। तो सबसे पहली आवश्यकता है कि सच्चा क्षत्रिय बनें। निर्मूल भय को हटा दें। हमारे से कोई भी भयभीत नहीं हो, यह हम विश्वास दिलाएँ अपने जीवन से। हमारा पुराना इतिहास बताता है कि एक ठाकुर भी होता था गाँव में तो दूसरी जातियों और उनकी बहू बेटियाँ

(शेष पृष्ठ 9 पर)

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह में उद्बोधन –

'कौम के इतिहास में आग बुझाने वालों में आए हमारा नाम'

आज एक ऐतिहासिक पल जो यहाँ आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति जी रहा है, जो एक आनन्द की अनुभूति कर रहा है उसे आनन्द के परमानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ। आज पूज्य तनसिंह जी की सौवीं जयन्ती समारोह में राष्ट्र के कोने-कोने से लोग आए हैं। किसी व्यक्ति की जन्म जयंती इतने वर्षों बाद भी मनाई जाए, उसका क्या कारण हो सकता है। केवल यही कि वह व्यक्ति युगपुरुष है। युगपुरुष उसे कहा जाता है जो युग की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए आता है और अपना सम्पूर्ण जीवन उस युग की माँग को पूरा करने के लिए लगा देता है। जैसे अभी राम की जय सुनकर हमको जोश आया क्योंकि राम हमारे पूर्वज थे और राम की सन्तान होने का गौरव हमें प्राप्त है। लेकिन राम भी एक युग पुरुष थे और उन्होंने अपने तात्कालिक युग की माँग की पूर्ति की इसीलिए आज भी हम उन्हें युगपुरुष के रूप में जानते हैं और जब उनके जयकारे लगते हैं तो हमको भी जोश आ जाता है। अनेकों अनेकों युगों में इस प्रकार के युगपुरुष आते रहे, चाहे वह राम के रूप में हो, चाहे कृष्ण के रूप में हो, चाहे बुद्ध के रूप में हो, चाहे महावीर के रूप में हो और ऐसे ही एक युगपुरुष के रूप में पूज्य तनसिंह जी आए जिनकी हम आज जन्म शताब्दी मना रहे हैं। वर्तमान युग की जो माँग थी उस मांग को उन्होंने पूरा करने का प्रयास किया, इसलिए हम उन्हें युग पुरुष की संज्ञा दे सकते हैं। एक 21 साल का युवक, जिसके सामने पूरा का पूरा अपना जीवन पड़ा है, कमाई करनी है, पढ़ाई करनी है, ऐसे व्यक्ति के मन में दीपावली की रात में एक चिंतन होता है कि मेरे समाज में रोशनी कैसे होगी। हम सब लोग दीपावली मनाते हैं लेकिन क्या हमारे भीतर इस प्रकार का चिंतन आरंभ होता है? ऐसा चिंतन हमारे मन में नहीं आता है इसलिए हम युगपुरुष नहीं बन पाते हैं और जिसके इस प्रकार का चिंतन उत्पन्न होता है वह युगपुरुष बन जाता है। हाँ, हम चिंता जरूर करते हैं। हम जहाँ भी पाँच आदमी बैठते हैं, चिंता करते हैं कि हमारे समाज का क्या हाल हो रहा है, हमारे समाज की क्या स्थिति हो रही है, हमारा समाज किस गर्त में जा रहा है, पतन की गहराई में जा रहा है। लेकिन चिंता करके अपने घर पर चले जाते हैं और घर पर जाकर इस चिंता को भूल जाते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने चिंता करके एक चिंतन भी किया कि जो इस प्रकार से गर्त में जा रहे हैं, वह क्षत्रिय जो गर्दन कटने के बाद भी तेरह-तेरह मील तक तक लड़ता था, जो अपने राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर हुआ करता था, जो मंदिर की, गाय की, स्त्री की और मान-मयार्दाओं की रक्षा के लिए तत्पर रहता था वह समाज आज इस पतन की गहराई में क्यों जा रहा है? जो राष्ट्र को मार्ग बताया करता था वह स्वयं दूसरों की ओर मार्ग के लिए देखने का किस प्रकार से प्रयत्न कर रहा है? जो इस प्रकार चिंतन करके समस्या के कारण को खोजते हैं और उसका समाधान प्रस्तुत करते हैं, वह युगपुरुष कहलाते हैं। ऐसा ही पूज्य तनसिंह जी ने किया श्री क्षत्रिय युवक संघ का निर्माण करके। उन्होंने राम जैसे हमारे महान पूर्वजों की केबल बातें करके हमारे अंदर जोश भरने का प्रयास नहीं किया बल्कि उस राम को पैदा करने का प्रयास किया, उस सीता को बनाने का प्रयास किया जो राम के साथ में 14 वर्ष तक वनवास जा सकती है। उन्होंने उस लक्ष्मण के निर्माण का प्रयास किया जो भाई की सेवा के लिए 14 वर्ष के वनवास के लिए तत्पर हो सकता है। जो इस प्रकार के मार्ग का निर्माण कर सकते हैं उन्हीं को युगपुरुष कहा जा सकता है, वही सच्चा क्षत्रिय कहला सकता है। इसीलिए आज हम राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के अन्दर पूज्य तनसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह मना रहे हैं। आपको यह लगता होगा कि हम

बार-बार इस प्रकार की भीड़ इकट्ठा क्यों करते हैं लेकिन यह भीड़ नहीं है ये एक अनुशासित संगठन है। यदि हम इस प्रकार का अनुशासन नहीं दिखा पाते हैं तो वह संगठन नहीं बनता है। संघ हमको इस प्रकार की एक प्रणाली देता है, इस प्रकार का मार्ग देता है कि यहाँ आकर प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर एक क्षत्रिय बनने का प्रयास करता है। यही अनुशासन है। एक दृष्टांत है कि एक जंगल में आग लगी और आग लगने के बाद सारे के सारे पशु-पक्षी उस आग को बुझाने में लग गए। कोई मिट्टी डाल रहा था, कोई पानी डालने का प्रयास कर रहा था, कुछ उसे आग से दूर जाने का भी प्रयास कर रहे थे। एक छोटी सी चिड़िया अपनी चोंच के अन्दर नदी से पानी भरकर उस आग में डालने का प्रयास कर रही थी। वह चिड़िया जब वहाँ से पानी लेकर आती थी तो कुछ तो पानी बीच में गिर जाता था, कुछ आग की गर्मी से भाप बनकर उड़ जाता था। एक हाथी यह देख रहा था। उसने कहा कि चिड़िया! तेरी छोटी-सी चोंच के अंदर तू पानी लाकर इस आग को बुझाने का प्रयास कर रही है लेकिन यह आग तू किस प्रकार से बुझा पाएगी। ऐसा कहकर उस हाथी ने उसका मजाक उड़ाया। उसे चिड़िया का जो उत्तर था वह हमको आज के समारोह से एक प्रेरणादाई संदेश के रूप में लेकर जाना चाहिए। उसका उत्तर था कि मेरी इस चोंच में जो पानी भरकर मैं ले जा रही हूँ इससे चाहे यह आग बुझे या ना बुझे, इस पर कोई फर्क पड़े या ना पड़े, लेकिन जब कभी इस जंगल का इतिहास लिखा जाएगा उस दिन मेरा नाम इस आग को बुझाने वालों में आएगा, आग लगाने वालों में नहीं। हम आज के समारोह से यही संदेश लेकर जाएँ कि हम जहाँ कहीं भी रहें, जिस किसी भी राज्य में या क्षेत्र में रहें, जहां भी हम काम करें, इस तरह से रहें कि आज जो इतिहास लिखा जा रहा है हमारी कौम का उसमें आग लगाने वालों में हमारा नाम नहीं हो, आग बुझाने वालों में हमारा नाम हो। ईश्वर से यही प्रार्थना है।

पृष्ठ 7 का शेष

निर्मूल भय को छोड़कर सच्चे क्षत्रिय बने : संरक्षक श्री

सब सुरक्षित रहती थी। यह हमारे पूर्वजों का इतिहास है कि मंदिर के लिए, संस्कृति के लिए हमने अपनी कभी परवाह नहीं की। दुनिया का सबसे सुंदर एक नारा है - जियो और जीने दो और क्षत्रिय के लिए नारा है मरकर के भी दूसरों को जीने का अधिकार दो। वो दिन कब आएगा? वह दिन तो आज ही है, आया हुआ ही है। इस भय को निकालते ही वह दिन आ जाएगा कि इस भारत को कोई मिटा नहीं सकता। हमारी संस्कृति को कोई मिटा नहीं सकता, हमारे धर्म की जड़ इतनी गहरी है कि इसको कोई उखाड़ नहीं सकता। उखाड़ सकते हैं तो हम ही उखाड़ सकते हैं। वह हम ना बन जाएँ ऐसा सोच हमको अपने जीवन में उतारना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी ने गीत लिखा जिसे अभी गाया, 'गीत तुम्हारे कंठ के बगीचे खिलते रहे, मैं चुन न सका यह बात बड़ी अकुलाती।' जब वे यह गीत लिख रहे थे तब मैं भी पास में बैठा था तो मैंने बीच में टोक करके पूछ लिया कि यह आप सोच रहे हैं या लोग सोच रहे हैं? तब उन्होंने कहा कि तुम्हारे समझ में आएगा लेकिन मेरे रहते नहीं आएगा। आज मुझे समझ में आ रहा है कि यह गीत उन्होंने क्यों लिखें। यह श्री क्षत्रिय युवक संघ उन्होंने क्यों प्रारम्भ किया। क्यों इतने अधिक लोगों को जोड़ा और भविष्य में जुड़ते रहने का एक मार्ग छोड़ गए। आप लोगों ने सब के सहयोग से पूरे भारतवर्ष में इस जयंती को राष्ट्रीय राजधानी में मनाने के लिए जो प्रयत्न किए हैं उनके परिणाम स्वरूप आज के कार्यक्रम की आवाज पूरी दुनिया में फैल गई है। बस यही इसकी सफलता है। **जय संघ शक्ति।**

आत्मीय जनों के सामाजिक भाव का वंदन, अभिनंदन

दिसम्बर, 2021 में हीरक जयन्ती की तैयारियों के समय एक विचार पनपा कि हमारे प्रणेता पूज्य तनसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह देश की राजधानी में मनाया जाये। विचार जनवरी, 2023 में परिपक्व हुआ और 25 जनवरी, 2023 से 25 जनवरी, 2024 तक पूज्य श्री का जन्म शताब्दी वर्ष मनाना तय हुआ और 28 जनवरी, 2024 को देश की राजधानी में स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में जन्म शताब्दी वर्ष के समापन पर विशाल कार्यक्रम करने का निर्णय हुआ। सहयोगियों ने इस निर्णय की अनुपालना में वर्ष भर विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रम किए। नये क्षेत्रों में संपर्क प्रारंभ हुआ, यात्राएँ की गई, शिविर भी रखे गये, स्नेह मिलन किए गये। सर्दी के मौसम में दूरस्थ क्षेत्रों से यात्रा की समस्या नजर आयी तो साथियों ने विशेष रेलगाड़ियों के बारे में बात चलाई और 16 विशेष रेलगाड़ियाँ चलनी तय हुई। देश की राजधानी हम लोगों के लिए अनजान जगह थी, स्थानीय स्तर पर संघ का काम पर्याप्त नहीं होने के कारण स्थानीय सहयोगी भी नहीं थे। इतना बड़ा स्टेडियम किराये करना और फिर वहाँ व्यवस्थाएँ करना एक बड़ी चुनौती थी। इतने बड़े आयोजन में होने वाले खर्च का प्रबंधन भी एक बड़ा प्रश्न था। दिल्ली के प्रशासन की विभिन्न एजेंसियों से कार्यक्रम की अनुमति लेना भी एक बड़ा विषय था लेकिन परमेश्वर की कृपा बरसी, सामाजिक भाव से ओत प्रोत नये सहयोगी मिलते गये और कारवाँ आगे बढ़ता गया। अनेक तरह की बाधाओं के बावजूद समारोह के दो दिन पहले तक पूरी 16 रेलगाड़ियों की अनुमति मिल गई। स्टेडियम को लेकर भी अनेक तरह की औपचारिकताएँ कदम दर कदम पूरी होती गई और साथी स्वयंसेवकों ने वहाँ मोर्चा संभाल कर सब व्यवस्थाओं को भी अंजाम दे दिया। अनजान शहर में परिचय बढ़ता गया और ऐसे नये सहयोगी मिलते गये जिन्होंने अपनत्व की सीमाओं के पार जाकर इस आयोजन को अपना स्वयं का आयोजन मानकर स्वयं को प्रस्तुत कर दिया। इतने बड़े आयोजन के खर्च का प्रबंधन भी होने लगा और समाजजनों ने इसे अपने ऊपर ओढ़ लिया। हरियाणा, उत्तरप्रदेश जैसे अनजान क्षेत्रों में साथी स्वयंसेवकों के दल पहुँचने लगे और पूज्य तनसिंह जी का संदेश घर घर पहुँचने लगा। माननीय भगवान सिंह जी द्वारा भेजे आमंत्रण को साथी स्वयंसेवक घर घर पहुंचाने लगे और सामाजिक भाव से ओत प्रोत स्थानीय समाज बंधु इसमें सहयोगी बनते गये। और अन्त में 28 जनवरी आ गई जब दिल्ली के रेलवे स्टेशन, मैट्रो स्टेशन और स्टेडियम की ओर जाने वाली सड़कें केशरिया रंग से रंग गई। राजस्थान के दूरस्थ क्षेत्रों के साथ साथ गुजरात, हरियाणा, उत्तरप्रदेश और दिल्ली के समाज जनों ने स्टेडियम को केशरिया रंग से रंग दिया। सागर की तरह मयार्दा में बंधकर हमने हमारी विशालता के दर्शन किए और करवाये। पूज्य तनसिंह जी की दिव्य उपस्थिति ने हमें प्रेरणा दी और हम सबने उस प्रेरणा के प्रकट रूप के दर्शन किए। संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक ने पूज्य श्री के अलौकिक स्पर्श का अनुभव किया और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। हम सब स्वयंसेवकों के लिए ऐसा दुर्लभ अवसर उपलब्ध करवाने में सहयोगी रहे प्रत्येक समाज जन के प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। संघ के सभी स्वयंसेवकों की ओर से मैं वहाँ आने वाले प्रत्येक समाज जन, उन्हें वहाँ आने के लिए प्रेरित करने वाले प्रत्येक सज्जन, उनके आने के लिए व्यवस्था जुटाने वाले प्रत्येक सज्जन, समारोह के खर्च के प्रबन्धन में सहयोग करने वाले प्रत्येक सज्जन और कार्यक्रम के आयोजन में सहयोगी बने प्रत्येक सज्जन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सबका सहयोग यूँ ही बना रहेगा जिससे हम संघ के वास्तविक कार्य को विस्तार देकर अधिकतम समाज बंधुओं के जीवन में पूज्य श्री के अवतरण में सहयोगी बन सकेंगे।

– **लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास,** संघप्रमुख, श्री क्षत्रिय युवक संघ

क्षात्र धर्म और पूज्य श्री तनसिंह जी

क्षात्र धर्म आदिकाल से चलता आ रहा है। सृष्टि के प्रारम्भ में नारायण पूर्ण सत्व स्वरूप थे। नारायण ने सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा की मधु और कैटभ नाम के दो राक्षसों से रक्षा की। यहीं से क्षात्र धर्म शुरु होता है। मार्कण्डेय पुराण और दुर्गा सप्तशती में भी इसी प्रकार का वर्णन आता है। हमारे शास्त्रों में, वेदों में भी क्षात्र धर्म का वर्णन है।

भगवान विष्णु क्षात्र धर्म के विषय में समझाते हुए राजा-मान्धाता से कहते हैं-

''क्षात्रो धर्मो ह्यादिदेवात् प्रवृत्तः।
पश्चादन्ये शेषभूताश्च धर्माः ।।21।।
अस्मिन धर्मे सर्वधर्माः प्रविष्टाः।
तस्माद् धर्म श्रेष्ठमिमं वदन्ति ।।22।।

आदिदेव विष्णु द्वारा प्रथम क्षात्रधर्म ही प्रवृत किया गया था। शेष धर्म इसके पश्चात् प्रवृत्त हुए थे। क्षात्र धर्म में सभी धर्म का समावेश है अतः इसे श्रेष्ठ धर्म कहा जाता है।

सर्वधर्मकरं लोक श्रेष्ठ सनातनम्।
शाश्वदक्षरपर्यन्तमक्षरं सर्वतोमुखम्।।

(म.भा. शां. रा. ध. पर्व, अध्याय 64,30)

क्षात्र धर्म सर्वधर्मों का प्रवर्तक और रक्षक, इस लोक में श्रेष्ठ, सनातन, नित्य, अविनाशी और मोक्ष पर्यन्त ले जाने वाला सर्वतोमुखी धर्म है।''

क्षात्र धर्म देश, काल और परिस्थितियों से भी ऊपर उठकर अपरिवर्तनशील है इसीलिए इस क्षात्र धर्म की युगसापेक्षता सदैव के लिए अक्षुण्ण है। 'क्षात्र धर्म' की युग प्रणाली शाश्वत सिद्धान्तों पर आधारित होने के फलस्वरूप यह स्थिर तथा वैज्ञानिक है।

क्षात्र धर्म सर्व धर्मों का प्रवर्तक और रक्षक, इस लोक में श्रेष्ठ, सनातन, नित्य, अविनाशी और मोक्ष पर्यन्त ले जाने वाला सर्वतोमुखी धर्म है। ऐसे श्रेष्ठ धर्म को धारण करने वाला क्षत्रिय है।

क्षात्र धर्म की तात्विक प्रकृति सांसारिक माया से निर्लिप्त रहने की है, पर जिस प्रकार कमल का तात्विक अंश पुष्प सदैव सब प्रकार से निर्लिप्त रहता है, उसी भाँति क्षत्रिय का तात्विक अंश उसकी आत्मा भी इस प्रकार के सब सम्बन्धों से सर्वथा निर्लिप्त और मुक्त रहता है। वह विदेह होता है, इसीलिये तो कर्तव्य पालन के निमित्त मरते समय वह सब प्रकार के माया बन्धनों से मुक्त होने के कारण निर्लिप्त भाव से परम मोक्ष को प्राप्त होता है।

क्षत्रिय की परिभाषा :

प्रकृति त्रिगुणात्यक है। क्षत्रिय शब्द भी प्रकृति के तीन गुण सत, रज और तम के आधार पर ही बना है।

सतोगुण और तमोगुण प्रकृति के दो छोर है। नदी के दो किनारे जिस प्रकार मिल नहीं सकते, उसी प्रकार जहाँ ज्ञान है, वहाँ अज्ञान नहीं है, जहाँ प्रकाश है वहाँ अन्धकार नहीं रह सकता एवं जहाँ न्याय है, वहाँ अन्याय नहीं है। इन दोनों के बीच की कड़ी रजोगुण है। इच्छा और क्रियाशीलता की प्रधानता वाला गुण रजोगुण है। यह इच्छा और क्रियाशीलता किस और ढलती है- सत् या तम, उसी प्रकार उसकी श्रेणी बनती है। रजोगुण जब सतोगुण की ओर उन्मुख होता है तब क्षत्रिय वृति का जन्म होता है, तो वह क्षत्रिय बनता है। रजोगुण जब तमोगुण की ओर उन्मुख होता है, तब असुरी वृति उत्पन्न होती है, तो असुर यानी राक्षस बन जाता है।

(1) सतोगुण + रजोगुण = क्षत्रिय

(2) तमोगुण + रजोगुण = असुर यानी राक्षस

क्षत्रिय वही है जो सतोगुण का पक्षधर है। जो सतोगुण का पक्ष लेता है वही ''परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्'' है।

''क्षतात् त्रायते इति क्षत्रिय''। जिसका पौरुष अपने स्व की रक्षा करता हुआ दूसरों के हितों की रक्षा करे वह क्षत्रिय है।

''क्षरते इति क्षत्रिय''– महाभारत वन पर्व द्रोपदी कहती है जो दुष्टों का क्षरण करता है, वही क्षत्रिय है।

महाकवि कालीदास ने अपनी अमर कृति रघुवंश महाकाव्य में क्षत्रिय को परिभाषित करते हुए बताया है–

''क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्नः क्षत्त्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।
राज्येन किं तद्विपरीत वृतेः प्राणेरूपक्रोशमलीम सैर्वा''।।

रघुवंश 2/53

उन्नत क्षत्रिय वर्ण का वाचक शब्द 'नाश से जो बचावे वह क्षत्रिय है,' इस व्युत्पति से संसार में प्रसिद्ध है, उससे विपरीत आचरण वाले क्षत्रिय का राज्य से क्या प्रयोजन अथवा लोक निन्दा से मलीन हुए प्राणों से क्या लाभ?

गीता में कहा है–

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।''

जो सत्य है, जो ज्ञानमय है, जो प्रकाशमय है, जो न्याय प्रिय है, जो सज्जन है, जो साधु है यानी सुकृत कार्य करने वाले हैं, उन सब की दुष्टों से, दुर्जनों से रक्षा कर, दुष्टों का विकाश करने वाला ही क्षत्रिय है। गीता के अनुसार क्षत्रिय की उत्पत्ति सृष्टि के सृष्टा द्वारा की गई है, अर्थात् आदि काल से है।

''त्रस्त प्राणी वेदना में करुण क्रंदन कर रहे।''

वह क्रन्दन सुनकर अन्तरः से जो तड़फ उठे, वो क्षत्रिय है।

त्राण या रक्षा दैहिक व भौतिक ही नहीं अंधकार व अज्ञान से भी जो रक्षा करता है वो क्षत्रिय है। हर प्रकार के क्षय से स्वयं की तथा अन्यों की रक्षा करने वाला क्षत्रिय कहलाता है। जो विष रूपी प्रवृति का विनाश करता है और अमृत रूपी प्रकृति की रक्षा करता है, वही क्षत्रिय है।

त्रस्त मानव समाज को दयनीय स्थिति से उबारने वाला, सबको राह पर रखने वाला, प्रजा का पालन-पोषण और रक्षण का उत्तरदायित्व निभाने वाला, साधु-सन्तो व सज्जनों का आश्रयदाता, सदैव सत्य न्याय और धर्म का हिमायती, दुष्टों और दुर्जनों का संहारक, आन-बान और मान-मर्यादा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाला क्षत्रिय है।

सृष्टि में क्षत्रिय की आवश्यकता :

सृष्टि के रक्षण के लिए ही क्षत्रिय का प्रादुर्भाव हुआ। वेदों में क्षत्रिय को बाहू माना है।

ब्राह्मणोऽस्यु मुखमासीद-बाहू राजन्यः कृतः।
उरुतदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्राऽजायतः।।

ऋग्वेद, यजुर्वेद

श्रुतियों के अनुसार एको अहम् बहुश्याम अर्थात् यह सृष्टि परमेश्वर का ही स्थूल स्वरूप है। इस सृष्टि में उस विराट पुरुष परमेश्वर ने क्षत्रिय को अपनी बाहु माना है। बाहु शरीर के पालन में सहायक बनता है। शरीर की रक्षा के लिए हाथों की संरचना हुई। अतः शरीर की सुरक्षा का उत्तरदायित्व हाथ का ही है। इस दृष्टि से इस सृष्टि के रक्षण का उत्तरदायित्व क्षत्रियों का आदिकाल से रहा है।

चारों वर्णों में क्षत्रिय को शरीर में हृदय माना है।

मुखतो ब्राह्मणा जाता उरसः क्षत्रियस्तथा।
उरुभ्यां जज्ञिरे वैश्याः पदम्यां शूद्राइति श्रुति।।

अरण्य 14-30

शरीर में जो हृदय का स्थान है, सृष्टि में वही स्थान क्षत्रिय का है। शरीर में हृदय काम करना बन्द कर दे तो शरीर बच नहीं पाता। इसी तरह इस संसार यानी सृष्टि में क्षत्रिय अपना नियत कर्तव्य कर्म करना बन्द कर दे तो संसार यानी सृष्टि जीवन ही गड़बड़ा जाएगा। इसी प्रकार का वर्णन महर्षि बाल्मिकी का है। क्षत्रिय के न रहने पर समाज व राष्ट्र का आस्तित्व संदिग्ध है। अतः सृष्टि के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए क्षात्र प्रवृत्ति का जिन्दा रहना आवश्यक है।

स्वामी करपात्री जी महाराज ने अपनी महत्वपूर्ण कृति ''मार्क्सवाद और रामराज्य'' में आज प्रजातंत्र के युग में भी क्षत्रिय की महत्ता बताते हुए लिखा है-जहाँ तक हो सके प्रजा को चाहिये कि राजा के रूप में कुलीन क्षत्रिय को ही चुने।

क्षात्र धर्म की आवश्यकता तब तक बनी रहेगी जब तक कि सृष्टि बनी रहेगी।

क्षत्रिय के कर्म :

मनु स्मृति में क्षत्रिय के निम्न कर्म बताये गये हैं:-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेपृ प्रसक्तिश्व क्षत्रियस्य समासतः।। (1-89)

प्रजा की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना और विषयों में न लगना संक्षेप में ये क्षत्रिय के सामान्य कर्म है। जबकि प्रजा-पालन, न्याय करना, रक्षा करना ये कर्म विशेष कर्म है।

मार्कण्डेय पुराण में क्षत्रिय के ये कर्म बताये गये हैं-

दानमध्यमनं यज्ञा क्षत्रियस्याप्ययंत्रिधा।
धर्मः प्रोक्त क्षिते रक्षा शास्त्रजीवश्च जीविका।।

दान देना, अध्ययन करना और यज्ञ करना, ये तीनों क्षत्रिय के कर्म कहे गये है। पृथ्वीपालन, शस्त्राभ्यास, क्षत्रिय के जीविका के साधन हैं।

पृथ्वी का पालन और प्रजा पालन के लिए शस्त्र उठाना अर्थात् बलिदान के लिए तत्परता यही जिसकी जीविका हो, इससे बढकर करने योग्य कर्म क्या रह जाते हैं।

गीता में भगवान कृष्ण ने क्षत्रियों के स्वाभाविक कर्मों को बताया है-

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वर भावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम्।।

18/45

शूरवीरता, तेज, धैर्य, दक्षता (चातुर्य), युद्ध से न भागना अर्थात् संघर्ष से विमुख न होना दान देना और ईश्वर भाव अर्थात् स्वामीभाव-ये सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं।

क्षत्रियो धार्यते चापोनार्त शब्दो भवेदिति।

- बाल्मिकी रामायण

क्षत्रिय इसलिए शस्त्र धारण करते हैं कि कहीं पृथ्वी पर दीन-दुखी संतप्त प्राणियों की आर्तवाणी न सुनाई पड़े। सम्पूर्ण समाज में चौकसी रखना क्षत्रिय का उत्तरदायित्व है। सभी प्राणियों में कोई आर्त दिखाई पड़ जाए तो बिना प्राणों की परवाह किये उस आर्त की रक्षा करना क्षत्रिय का परम कर्तव्य है।

शास्त्र सम्मत क्षत्रिय के कर्म क्या है? इसमें बताया है :-

आ बुन्द वृत्रहा ददे जगतः पृच्छाहिमातरम्।
क उग्रा के हा श्रृणिवरे।। सामवेद (2.216.3)

क्षत्रिय को चाहिये कि वह शास्त्र विद्या में निष्णात हो, हाथ में शस्त्र लेकर, प्रजा में उपद्रवी और दस्युओं की खोज करे।

अपराध करने पर स्वजनों तथा माता, पिता, मित्र और गुरुजनों का भी न्याय के सामने सब प्रजा के समान ही माना है। प्रजा की रक्षा के लिए दुष्कर्म करने वाला माता-पिता, आचार्य और मित्र आदि भी क्यों न हो, न्याय मुक्त दण्ड अवश्य दें। क्षत्रिय परमेश्वर की तरह न्याय करने वाला होता है।

किसी जाति, धर्म, देश विशेष की रक्षा करना नहीं अपितु जो असुर है, वह सत् का विरोधी है, उससे सद् को बचाना है, असद् को विनष्ट करना ही क्षत्रिय का कार्य है।

गीता में कहा गया है-

''परित्राणाय साधूनां विनाशाम च दुष्कृताम''

यह कार्य क्षत्रिय का है अर्थात् दुष्टों का दलन व सज्जनों की रक्षा करना क्षत्रिय का ही कार्य है। विषरूपी प्रवृति का विनाश करना और अमृत रूपी प्रवृति की रक्षा करना, भलाई का सृजन व रक्षण करना और बुराई का लोप और संहार करना ये क्षत्रिय के कार्य है। त्राण या रक्षा दैहिक व भौतिक ही नहीं अन्धकार व अज्ञान से भी रक्षा करना क्षत्रिय का काम है।

आदिकाल से मानवता के रक्षण, पोषण और उसके लौकिक और पारलौकिक उत्कर्ष के लिए यदि कोई वर्ण उत्तरदायी था तो वह वर्ण मुख्य रूप से था क्षत्रिय।

सृष्टि में क्षत्रिय ही विशिष्ठ क्यों? :

कैसा अद्भुत, निराला व गौरवपूर्ण इतिहास रचा क्षत्रियों ने, जिसका कोई सानी ही नहीं। कितना संघर्षपूर्ण था उनका जीवन, कभी चैन से बैठे ही नहीं। क्षत्रिय अपने दम, पुरुषार्थ, शौर्य, तेज, ज्ञान, ध्यान और तपस्या से असंभव को भी सम्भव करता गया, विजय पताका फहराता गया, उनका परचम लहराता गया, कभी रुका नहीं, सदैव अक्षुण्ण बना रहा। प्रश्न यह कि क्षत्रिय ही विशिष्ट क्यों और कैसे? इसे हर कोई जानना चाहेगा, तो इसे जानिये, इसका उत्तर निम्न प्रकार से समझिये :-

क्षत्रियों ने इस जग को–

कभी वेद विद्या की शक्ति से था जीता
कभी ज्ञान ध्यान और भक्ति से भी जीता
कभी जग को जीता सुशासन के द्वारा
प्रलय से न डूबा हमारा सितारा
बिना पंख ऊँची भरी थी उड़ाने।।

मनुस्मृति में क्षत्रिय को इस जग में सर्व श्रेष्ठ बताया है।

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमत्सु नरा श्रेष्ठा, नरेषु क्षत्रियाः स्मृता।।

(मनुस्मृति)

सृष्टि के समस्त भूतों (जड़-चेतन) में प्राणवान श्रेष्ठ है और प्राणधारियों में बुद्धिधारी श्रेष्ठ हैं, बुद्धिधारियों में मनुष्य और मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ कहे गये हैं।

चार वर्णों में क्षत्रिय वर्ण एक ऐसा है जो अपने लिए नहीं अपितु दूसरों के लिए जीता है और दूसरों के लिए अपना उत्सर्ग कर देता है। क्षत्रिय की पैदाइश दूसरों के लिए ही है, इसलिए अपने लिए जीना क्षत्रिय के लिए कष्टपूर्ण जीवन है और दूसरों के लिए जीवन जीना उनके लिए सुखद अहसास है। दूसरों के लिए जीने का जो आनन्द है, वह और किसी में नहीं है। इस जीवन में वे ही क्षण आनन्द के होते हैं, जब दूसरे के लिए भले ही थोड़ी देर के लिए ही सही, जीवन जीते हैं।

क्षत्रिय का तो उद्भव ही दूसरों के त्राण व रक्षण के लिए हुआ है। इसलिए क्षत्रिय जनमानस व प्राणीमात्र के कल्याण व रक्षण के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करता आया है। उनकी यही नियति है। त्याग, बलिदान व उत्सर्ग ही उनका जीवन है।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया–

''क्षत्रिय की पैदाइश ही परमार्थ के लिए हुई है, उनका व्यक्तिगत कुछ है ही नहीं। विधाता ने उनके भाग्य में परोपकार व परमार्थ ही लिखा है, यही उनकी नियति है और यही उनका नियत कर्म है।''

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने अनुयायियों से कहा–

''हमें यह समझना है कि हमें जो जीवन मिला है, वह अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए है। हम अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जियें, दूसरों के काम आवें। जिस प्रकार दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है, उसी भाँति हम भी संसार के लिए जीयें, समाज के लिये जीयें, अपने आपको समाज की सेवा में लगा दें। समाज की सेवा ही परमात्मा की सेवा है, ईश्वर की आराधना है।''

''क्षत्रिय परम्परा की मूल धारा में जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ, वह था स्वयं का उत्सर्ग करके भी अन्यों को जीवित रहने देने के अधिकार की रक्षा करना, अपने आपको मिटाकर उसकी नींव पर देश, धर्म और मानवता की इमारत खड़ी करना, इसीलिए अपना बलिदान देकर दूसरों को जीवनदान देना सदियों से क्षत्रिय परम्परा रही है।''

क्षात्र परम्परा के सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी के बताया –

''सृष्टि के आदिकाल में एक महान यज्ञ का अनुष्ठान

हुआ जिसमें युगों-युगों तक आहुतियाँ गिरती गई और ज्वालाएँ धधकती गई। इसी यज्ञ में अपना सब कुछ अर्पित करने की एक अद्भुत परम्परा को जन्म मिला, तब से यह परम्परा अविरल रूप से चलती आ रही है। क्षत्रियों के इस गौरवपूर्ण अतीत का कारण है क्षत्रियों की क्षात्र परम्परा जो कभी क्षीण नहीं हुई, सदैव अक्षुण बनी रही। कभी एक स्वप्न के लिए, कभी किसी कबूतर के लिए, कभी किसी गाय के लिए, तो कभी मानव समुदाय के लिए, कभी सत्य सिद्धान्त का उपार्जन कठोर तपस्याओं, अचिन्त्य लोक संग्रह और अद्भुत भीष्म प्रतिज्ञाओं से हुआ तो कभी लपलपाती हुई तलवारों से रणांगणों में मर-मिटने की कामनाओं से हुआ, कभी आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए तिल-तिल कर मिटने की कहानियों ने, कभी जलती हुई ज्वालाओं में जीवित ही भस्म होने की परम्पराओं ने, उस जीवन का सृजन किया जिसने मृत्यु के सभी बन्धनों को तोड़ कर एक शाश्वत संजीवनी प्रवाहित कर दी।

''सत्य की रक्षा के लिए राज्य, धन, सम्पत्ति, पत्नी, पुत्र और स्वयं अपने शरीर का भी बलिदान कर देने वाले हरिश्चन्द्र, अतिथि के स्वागतार्थ अन्न का सप्रेम दान देने वाले रंति देव, याचक की इच्छापूर्ण करने के लिए अपने पुत्र तक के शरीर पर खंग चलाने वाले मयूरध्वज, शरणागत के परित्राणार्थ अपने देह का मांस तक तोल देने वाले शिवि, एक गाय की रक्षा के लिए अपने कोमल कान्त तरूण कलेवर को क्रूर व्याघ्र का ग्रास बनाने के लिए प्रस्तुत दिलीप, प्रजा के एक व्यक्ति को भी प्रसन्न रखने के लिए अपनी प्राण प्रिया परम पतिव्रता अर्द्धांग्नि को वनवास देने की कठोरता दिखला सकने वाले राम, ऐसे-ऐसे आदर्शो से जिसके इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं, जिनका ऐसा स्वर्णमय इतिहास, वह कौम कट जायेगी लेकिन झुकेगी नहीं, उसने सत्य और न्याय की राह कभी छोड़ी नहीं और अपनी परम्परा को कायम रखते हुए अपने लक्ष्य की ओर अबाध गति से आगे बढती रही, अन्याय, अत्याचार और अन्धकार को युगों तक काटती रही, यही इस क्षत्रिय कौम की परम्परा है।''

''इतिहास में काल ने जब कभी त्याग और बलिदान की मांग की, उस मांग को पूरा करने के लिए क्षत्रिय परम्परा ने अचिन्त्य बलिदान किए, अद्वितीय वीरता और साहस के उदाहरण रखे, बिना सिर लड़ते रहना, जीवित चिताओं में जल जाना और मरने के समय केशरिया बाना पहनकर हँसी-खुशी से देश धर्म पर बिना एक कदम भी पीछे हटाये सर्वस्व उत्सर्ग करने की निराली परम्परा के क्षत्रिय जन्मदाता हैं। संसार की किसी भी जाति का ऐसा कोई भी इतिहासकार नहीं है, जिसने क्षत्रिय के शौर्य, चरित्र, महानता और वीरता की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा न की हो। स्वयं शत्रु भी श्रद्धा से नतमस्तक होता था।''

अंग्रेज इतिहासकार कर्नल टॉड ने राजपूत क्षत्रियों के विषय में लिखा है -

''राजपूतों जैसी असाधारण चरित्र वाली जगत में अन्य कौनसी जाति है जो भारत पर सदियों से भारी अत्याचार होने के बावजूद अपने देश की सभ्यता और अपने पूर्वजों के आचार-विचारों का रक्षण करने में समर्थ हुई हो।''

महाकवि कालीदास ने अपने रघुवंश महाकाव्य में क्षत्रिय के लिए कहा है-

''जो निर्भीक होकर अपनी स्वयं की रक्षा करते हुए दूसरों की भी रक्षा करने वाले, आरोग्य रहकर धर्म व्यवहार करने वाले, लोभ रहित होकर धनोपार्जन करने वाले, विषयों के वश में न आने वाले, समस्त विद्याओं में पारंगत, व धर्म परायण, मर्यादा पालन के लिये अपराधियों को दण्ड देने वाले, सन्तान के लिए विवाह करने वाले, ज्ञान में मौन, सामर्थ्य में क्षमा, दान में प्रशंसा रहित और जिनके लिए अर्थ और काम धर्म ही था, जो चरित्रवान, कामजयी, दानदाता, शुद्धमना, मृदुभाषी, रण में शूरवीर और जगत के प्रति ईश्वर

भाव रखने वाले,– इन विशेषताओं वाले क्षत्रिय ही इस संसार का त्राण कर सकते हैं।''

क्षत्रिय का प्राण स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि परमार्थ के लिए होता है। वह अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीता है, दूसरों के काम आता है यानी क्षत्रिय का जीवन सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय है। इसलिए वह अपना उत्सर्ग निम्न पाँच हेतुओं के लिए करता आया है– 1. स्वदेश की रक्षा के लिए, 2. शत्रु के नाश के लिए, 3. धर्म की रक्षा के लिए, 4. अधर्म के नाश के लिए और 5. शरणागत की रक्षा के लिए।

क्षत्रियों के इस गौरवपूर्ण इतिहास का आधार बलि होने की परम्परा व आत्मबल था। पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया–

''दूसरों के लिए अपने आपको निःशेष रूप से खपा देने के पीछे बलि होने का भाव, बलि होने की परम्परा तथा शस्त्र और साधन से भी कहीं अधिक बलवान आत्मबल है। इसी आत्मबल के कारण इके दुक्के व्यक्तियों ने संसार के नये इतिहास बना डाले और जातियों के भविष्य बदल डाले। बलि होने का भाव व आत्मबल के सामने संसार के सभी शस्त्र बेकार हैं। मानव जाति का भविष्य इसी से सुरक्षित रह सकेगा और इसी से राजपूतों का भी भविष्य सुरक्षित है। बलि होने का भाव व आत्बबल का सम्बन्ध हमारे अन्तर्जगत से है।''

क्षात्र भाव है तो वह क्षत्रिय है। क्षात्र भाव केवल विचार से नहीं, **भाव धारा** से संभव है। त्याग, बलिदान व उत्सर्ग भाव धारा के बिना सम्भव नहीं। पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया–

''भाव का जहाँ अभाव है, वहाँ क्षात्र भाव पनप ही नहीं सकता। समाज व राष्ट्र के लिए त्याग करने की बात, उत्सर्ग करने की बात, माता-पिता, भाई, पुत्र आदि के लिए त्याग करने की बात भाव धारा बिना संभव नहीं। भाव धारा का स्रोत हृदय है।''

अपना बलिदान देकर दूसरों को जीवनदान सदियों से क्षत्रियों –की परम्परा रही है। अपने आपको मिटाकर उसकी नींव पर देश, धर्म और मानवता की इमारत खड़ी करना ही क्षत्रिय का जीवन हेतु है।

क्षत्रिय का जीवन सूर्य की तरह तेजोमय और संसार की समस्त सत्ताओं की शक्ति का आदि स्रोत है। सूर्य की भाँति क्षत्रिय का उदय हो जाये तो सृष्टि में अंधकार रह नहीं सकता। क्षत्रिय इस वसुन्धरा का प्रचण्ड शौर्य सम्पन्न अवांछनीयता को जलाकर भस्म करने वाला सूर्य है।

क्षत्रिय का जीवन परकाजी होता है, इसलिए अपने परिवार के हित के लिए अपने व्यक्तिगत हित को छोड़ देना, समाज के हित के लिए अपने परिवार के हित को छोड़ देना, समाज के हित के लिए अपने गाँव के हित को छोड़ देना और राष्ट्र के हित के लिए अपने समाज के हित को छोड़ देना उनका स्वभाव है, इसी तरह दुष्टों का दलन व सज्जनों की रक्षा करना, दूसरों को दुःखों में देखकर अन्तर से तड़फ उठना उनका स्वभाव है। ऐसे श्रेष्ठ कोटि का जीवन जीने वाले, ऐसे उत्कृष्ट गुणों को धारण करने वाले क्षत्रिय ही जगत में वन्दनीय हैं, विशिष्ट हैं और ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है जो सदैव वन्दनीय है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था जैसी अन्यत्र कहीं भी ऐसी सामाजिक व्यवस्था नहीं थी। अपना बलिदान देकर दूसरों को जीवन दान देना सदियों से हमारी परम्परा रही है। हमारा क्षात्र धर्म सर्व धर्मों का प्रवर्तक और रक्षक, इस लोक में श्रेष्ठ सनातन, नित्य अविनाशी और मोक्ष पर्यन्त ले जाने वाला सर्वतोमुखी धर्म है। ऐसे श्रेष्ठ धर्म के पालन की इच्छा रखने वाले क्षत्रिय अपने प्रमाद व संस्कारहीनता के कारण सतोगुणीय भाव से गिरकर तमोगुण से आक्रान्त होकर पथ विचलित धर्मच्युत और अपने कर्तव्य व उत्तरदायित्व से विमुख हो गया। उनमें जो त्याग की भावना थी वो लुप्त होने लगी और उनकी जगह स्वार्थ भावना घर करने लगी।

परिणामस्वरूप हमारे इस गौरवपूर्व इतिहास का आधार बलि होने की परम्परा व आत्मबल था जो अब निस्तेज होने लगा। क्षत्रिय समाज की दिशा और दशा दोनों बिगड़ने लगी। समाज में अनेक दोष पैदा हो गये और समाज में विसंगतियाँ बढ़ गई। फलस्वरूप चारों ओर का कतावरण प्रदुषित व विषमय होने से सुशासन देने वाला क्षत्रिय इससे बच नहीं पाया। इस बदौलत क्षत्रिय समाज अपनी संजीवनी शक्ति ''क्षात्र शक्ति'' विस्मृत कर अपने पथ से भटक गया। क्षत्रिय अपने पथ से भटके तो सारा संसार अपने मार्ग से भटक गया क्योंकि सम्पूर्ण मानवता का भाग्य क्षत्रिय समाज से बंधा हुआ है। क्षत्रिय की इस जड़ता जन्म विकृतियों से सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया और सारी व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो गयी। ऐसी परिस्थिति में संसार में अधर्म बढ़ने लगा। ज्यों-ज्यों अधर्म बढने लगा, त्यों- त्यों इनके साथ ही संसार में पापाचरण, कलह, विद्रोह आदि दोष भी बढ़ने लगे।

जब सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त व सारी व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो गयी तो उन्हें दुरुस्त करने के लिए चेतन्य को क्षत्रिय बनकर जगत में आना पड़ता है क्योंकि यहाँ उन्हें क्षत्रिय का ही कार्य करना पड़ता है इसलिए पूज्य श्री तनसिंह जी का एक क्षत्रिय के घर में अवतरण हुआ।

गीता में श्री कृष्ण कहते हैं- जब-जब धर्म खतरे में पड़ता है, साधु-सज्जनों पर संकट आता है, तब मैं स्वयं अवतार लेता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

आप प्रकट होकर करते क्या हैं?-

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

ईश्वरीय कार्य सम्पादित करने के लिए हर युग में महापुरुष आते रहते हैं। यह एक लम्बी श्रृंखला है। इस श्रृंखला में एक कड़ी बनकर जगत को समयानुकूल दिशा दर्शन और मार्गदर्शन देने के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी इस जगत की आवश्यकता बनकर इस भारत भूमि में अवतरित हुए।

पथ विचलित व धर्म विस्मृत क्षत्रिय समाज को अपने नियत कर्तव्य कर्म व स्वधर्म की याद दिलाने, सुप्त पड़ी क्षात्र शक्ति को जागृत कर क्षत्रियत्व का बोध कराने के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी का एक क्षत्रिय के घर में जन्म हुआ।

स्वाभिमानी क्षत्रियों को ऐसी क्षत अवस्था देख पूज्य श्री तनसिंह जी का हृदय वेदना से भर उठा। क्षत्रिय समाज की दुर्दशा ने, इनके गिरते अस्तित्व ने पूज्य श्री को व्यथित कर दिया। जगत की दुःख की हालत के प्रति हृदय में उपजी पीड़ा ने ही पूज्य श्री तनसिंह जी का ''क्षात्र शक्ति'' के अभ्युदय के लिए प्रेरित किया। जगत के दुःखों का निवारण ''क्षात्र शक्ति'' के अभ्युदय से ही हो सकता है। तमोगुण से आक्रान्त क्षत्रिय वृति को सतोगुण की ओर उन्मुख करना क्षात्र शक्ति का अभ्युदय है। क्षात्र शक्ति का अभ्युदय न केवल क्षत्रिय समाज के लिए बल्कि सम्पूर्ण मानव जीवन व प्राणीमात्र की आवश्यकता है। इसलिए समाज, राष्ट्र व जगत को बचाने के लिए इस युग में क्षात्र धर्म के समग्र प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस की गई।

जो कुछ अनपेक्षित हो रहा था, उसको रोककर युग का रुख बदल डालना क्षात्र शक्ति के सक्रिय हुए बिना सम्भव नहीं था। यह काम तमोगुण से आक्रान्त सुप्त क्षत्रिय समाज को कर्तव्य के सात्विक मार्ग पर पुनः प्रतिष्ठित करने से ही हो सकता था। समाज को कर्तव्य के सात्विक मार्ग पर प्रतिष्ठित करने के लिए तमोगुण से आक्रान्त क्षत्रिय वृति को सतोगुण की ओर उन्मुख करना होगा और यह काम तमोगुण से आक्रान्त सुप्त क्षत्रिय समाज को जागृत करने से ही हो सकता था, इसलिए सुप्त क्षत्रिय समाज को जागृत करना अब पूज्य श्री तनसिंह जी का ध्येय बन गया लेकिन बिना संगठित शक्ति के समाज जागरण सम्भव नहीं था इसलिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने क्षत्रिय समाज जागरण के लिए एक

संगठित शक्ति की आवश्यकता महसूस कर 22 दिसम्बर, 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की।

श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना समय की मांग और जगत की आवश्यकता को देखते हुए ईश्वरीय चाह के अनुरूप हुई।

क्षत्रिय समाज अपने प्रमाद व संस्कारहीनता के कारण निस्तेज होने जा रहा था। निस्तेज होती क्षात्र परम्परा ने पूज्य श्री तनसिंह जी के भीतर अन्तर्वेदना पैदा की। पूज्य श्री की इस अन्तर्वेदना से उनमें एक संकल्प जगा। यह संकल्प ही श्री क्षत्रिय युवक संघ के जन्म का कारण बना।

अपने भीतर जगे संकल्प ने पूज्य श्री तनसिंह जी को कभी शान्त बैठने नहीं दिया और उन्होंने बीस वर्ष की अवस्था में समाज जागरण का बीड़ा उठाया। समाज जागरण का अर्थ है–उनमें सुप्त पड़ी क्षात्र शक्ति को जागृत कर उसका भान कराना, धर्म विमुख समाज को स्वधर्म का ज्ञान कराना और उसी पर आचरण करने का अभ्यास कराना।

समाज को कर्तव्य के सात्विक मार्ग पर प्रतिष्ठित करने के लिए दिन–रात अथक परिश्रम के साथ पूज्य श्री तनसिंह जी समाज जागरण की यात्रा पर अपने सहयोगियों के साथ गाँव–गाँव, नगर–नगर जागृति का संदेश देने निकल पड़े और बिछुड़े हुओं को बुलाकर मेले लगाने शुरू किये।

इन्सानियत को खाने वाली संस्कारहीनता व प्रमाद के दुष्परिणामों से क्षत्रिय समाज को बचाने के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी रुग्ण जाति व समाज को एक व्यवहारिक शिक्षण और मार्गदर्शन देने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में अपनी शिक्षण प्रणाली में **''सामुहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली''** को अपनाया ताकि मलिन विचार और विकृत मानसिकता वालों को ''सामुहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली'' के माध्यम से संस्कारित कर उनका शुद्धिकरण किया जा सके और समाज की टूटती परम्पराओं को रोका जा सके, जन मानस में क्षीण होते क्षत्रिय वर्चस्व को पुनः उभारा जा सके, सुप्त हृदयों में चेतना और जागृति का मंत्र फूंक कर जर्जरित होते क्षत्रिय समाज को सुदृढ किया जा सके, हारे हुए अर्जुनों के हाथों में गांडीव थमा कर कर्तव्य के पावन पथ पर उन्हें अग्रसर किया जा सके, पथ विचलित व धर्म विमुख क्षत्रियों को संस्कारित कर पुनः स्वधर्म पथ पर आरूढ किया जा सके और निस्तेज होती क्षात्र परम्परा को पुनः अक्षुण्ण बनाया जा सके।

श्री क्षत्रिय युवक संघ में शिक्षण पाने वाले स्वयं सेवकों को संघ अपनी ''सामुहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली'' के माध्यम से उन्हें संस्कारित कर संगठित करने का काम कर रहा है। संस्कारित व्यक्ति कभी भी व्यक्तिशः जीवन को महत्त्व नहीं देते। वे अपने जीवन में सामुहिक व सहयोगी जीवन को ही महत्व देते हैं।

विधाता ने क्षत्रिय के भाग्य में परोपकार व परमार्थ ही लिखा है। उनकी पैदाइश ही परमार्थ के लिए हुई है, इसलिए क्षत्रिय का अपने देश के चप्पे–चप्पे से, जग में स्थित समस्त मानवता व प्राणी मात्र से रागात्मक सम्बन्ध होता है। पूज्य श्री तनसिंह जी क्षत्रियोचित गुणों से परिपूर्ण, वे पूर्ण क्षत्रिय थे। उनका सृष्टि के कण–कण से प्रगाढ आत्मीय सम्बन्ध था, इसलिए उन्होंने कहा– –

''इस देश से मुझे इसलिए प्रेम है कि इसी देश की स्वतंत्रता के लिए हमारे पूर्वज क्षत्रियों ने जौहर और शाके कर दिखाये, वर्षों तक जंगलों और पहाड़ों में भटके, पीढियों तक बलिदान किये और मरने के बाद तक भी लड़ते रहे। इस धरती से इसलिए प्रेम है कि इसके साथ हमारा, हमारे पूर्वजों का पवित्र रागात्मक सम्बन्ध है। इसका शताब्दियों तक भोग करने के कारण यह पत्नी रूप में और पोषण प्राप्त करने के कारण यही माँ के रूप में आदरणीय भी है। इसकी नदियों और पहाड़ों से इसलिए प्रेम हैं कि वहीं हमारे पूर्वजों ने अचिन्त्य खेल खेले हैं। यहाँ की चप्पा–चप्पा भूमि पर मेरे पूर्वजों के पदचिन्ह अभी तक मिटे नहीं हैं। इसके तीर्थों और मन्दिरों से इसलिए प्रेम है कि उन्हीं की मर्यादा रक्षा के लिए मेरे पूर्वजों ने असंख्य बलिदान किये।

गठ-जोड़ों को छोड़ कर उनकी रक्षा के लिए मेरे पूर्वजों ने अद्भुत परम्परा का निर्माण किया। इसकी धर्म, संस्कृति और भाषा से इसलिए प्रेम है कि क्षत्रियों ने ही धर्म का व्यवहारिक आचरण किया। इसकी धर्म, संस्कृति का भव्य रूप क्षत्रियों की परम्परा से ही निखर कर स्तुत्य बन सका और क्षत्रियों के यशोगान में कवियों की कल्पनाएँ थक गई, लेखकों की लेखनियाँ टूट गई, कलाकारों की कलम हार मान गई और भाषा उन क्षत्रियों की गाथा गाते-गाते स्वयं महान हो गई।''

संतप्त, त्रस्त व पीड़ित मानवता को देखकर पूज्य श्री तनसिंह जी का व्यथित होना और कहना -

''पगली धरती के आँचल को में तीर्थ बनाने आया हूँ।''

यह धरती माता कभी निर्मल थी, पवित्र थी, पाक थी- जो अब कलुषित हो गयी। इस पर अत्याचार बढ़ गये, अराजकता फैल गयी, चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी। संसार के बिगड़े हालात को सुधारने के लिए अवतार होते हैं। धरती को पाप मुक्त करने, धर्म की स्थापना करने और अधर्म का नाश करने के लिए महापुरुष को धरती पर जन्म लेकर हम लोगों के बीच आना पड़ा।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपना इस धरती पर अवतरण होने का कारण बताते हुए कहा -

''गुमराह हठीलों के प्रांगण में मैं अलख जगाने आया हूँ।''

ऐसे गुमराह, पागल जो बिना ध्येय भागे जा रहे हैं और बिना समझ के रूढिगत जीवन जी रहे हैं उनको धर्म, संस्कृति और कर्तव्य का ज्ञान कराने, उनके प्रांगण में अलख जगाने आया हूँ अर्थात् उन्हें जागृत कर सही दिशा-दर्शन देने आया हूँ। अपना इस धरती पर आने का एक और कारण बताते हुए पूज्य श्री ने कहा-

''हारे अर्जुन को कर्म योग का पाठ पढाने आया हूँ।''

क्षत्रिय समाज ने बाहरी शत्रु पर तो हमेशा जीत हासिल की है, पर भीतरी शत्रु से परास्त हो गया। क्षत्रिय अपने अहंकारवश, मोहवश, निजी स्वार्थवश भीतरी शत्रु से हार गया और अकर्मण्यता व निष्क्रियता उसके जीवन पर छा गयी। ऐसी स्थिति में पूज्य श्री तनसिंह जी हारे अर्जुन को यानि क्षत्रिय समाज के लोगों को निष्काम कर्म योग का पाठ पढाने हेतु हम लोगों के मध्य उनका अवतरण हुआ।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने क्षत्रियों में सत्व गुण को पुनर्जीवित करने के लिए क्षत्रिय समाज को ''श्री क्षत्रिय युवक संघ'' के रूप में एक अनुपम व दिव्य तोहफा दिया है, जीवन दर्शन दिया है, जीने का तरीका दिया है, जीवन जीने का ढंग बताया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ निरन्तर समाज में सुप्त ''क्षात्र-शक्ति'' को जगाने का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। ''क्षात्र-शक्ति'' ही मानव कल्याण का सपना साकार करने में समर्थ है।

तमोगुण से आक्रान्त क्षत्रिय में सतोगुण का संचार कर सुप्त क्षात्र-शाक्ति को जागृत करने हेतु मार्गदृष्टा के रूप में पूज्य श्री तनसिंह जी ने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की-

क्षत्रिय कुल में प्रभु जन्म दिया तो,
क्षत्रिय के हित में जीवन बिताऊँ।

समय की माँग और युग धर्म की पुकार पर महापुरुष का प्रादुर्भाव होता है और वे अपना काम करके एक निश्चित कालावधि के बाद अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर उनके द्वारा प्रतिपादित विचार धारा शाश्वत होती है जो उनके भौतिक शरीर के न रहने पर भी अजस्त्र रूप से उद्देश्य पूर्ति के मार्ग पर प्रवाहित होती रहती है। ●

गुण दर्शन ही ईश्वर का अंश दर्शन है। दूसरों में व अपने भीतर भी गुणों को देखना ही ईश्वर देखने का अभ्यास है। दोष-दर्शन केवल माया के दर्शन हैं। दोष गुणों की छाया हैं, गुण और सत्य एक है। **- पू. तनसिंह जी**

श्रद्धेय श्री तनसिंह जी

मेरे प्रेरणा के स्रोत

– बिशनसिंह खिरजां

श्रीमान् तन सिंह जी साहब से मैं सर्व प्रथम वर्ष 1958 में चौपासनी स्कूल में शक्ति पूजा के कार्यक्रम में मिला। मैं उनका उद्‌बोधन सुनकर बहुत प्रभावित हुआ तब दूसरे दिन से ही मैं क्षत्रिय युवक संघ की शाखा में जाना शुरू हुआ। वर्ष 1958 में मैंने प्रथम ओ.टी.सी सूंधामाता कैम्प किया। कैम्प काफी कष्टदायक पर आनन्ददायक रहा। श्रीमान् तनसिंह जी व श्रीमान् आयुवान सिंह जी के बौद्धिक, विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे खेलकूद, विनोद सभाएं, सहगायन व मेरी साधना के अवतरणों की चर्चाएं आदि के माध्यम से कई प्रकार के संस्कार जैसे ईमानदारी, अनुशासन, कर्तव्य-परायणता, मितव्ययता, त्याग की भावना, समपर्ण की भावना, आपसी सहयोग, अहम भाव को समाप्त करना, बड़ों का सम्मान करना आदि गुणों व संस्कारों को धारण करने की सीख मिली व इन गुणों का पालन करने के लिए जीवन में धारण करने का संकल्प लिया। इस कार्य में मैं कितना सफल और असफल हुआ यह मुझे पता नहीं। मेरे अलावा कैम्प में 70-80 स्वयंसेवक थे उनमें से भी इन गुणों को धारण करने में कौन कितना सफल हुआ इस बात को श्रद्धेय व पूजनीय श्रीमान् तनसिंह जी साहब ही जानते थे।

उपरोक्त परीक्षा में श्रीमान् तन सिंह जी साहब ने कितनों को पास किया यह भी पता नहीं परन्तु इस कैम्प के बाद मैं 1959 में नाडोल आई.टी.सी कैम्प में गया तो श्रीमान् तनसिंह जी साहब के जबान पर मेरा नाम था व कभी कभी तो घट बांटते समय व कई कार्यक्रमों में चाहे मेरी गलती हो या अच्छाई हो तो भी साहब मुझे समय-समय पर मेरे नाम से ही पुकारते थे। जिससे मुझे यह पता चल गया था कि मैं सूंधा माता ओ.टी.सी में पास हो गया।

इसके पश्चात मैंने कई कैम्प किये व ज्यादातर ओ.टी.सी ही किये. उनमें मैं साहब के सम्पर्क में रहा। साहब के MLA व MP रहने के दौरान जयपुर या दिल्ली आते-जाते जोधपुर रेलवे स्टेशन पर अनेकों बार मिलते हुए संपर्क बनाये रखा।

1962 में मैंने जोबनेर एग्रीकल्चर कॉलेज में एडमीशन लिया तो वहाँ मैं, श्री करण सिंह बछवारी, उम्मेद सिंह ढूंढ़िया, उम्मेद सिंह मोहनगढ, मानसिंह जालसू साथ-साथ रहते थे तब श्रीमान् तनसिंह जी साहब ने कहा कि कॉलेज में कुछ अन्य राजपूत भी होंगे सो वहाँ शाखा लगाओ ताकि संघ के टच में रहोगे, अन्यथा दूरियाँ बढ़ जावेगी। तब साहब ने मुझे शाखा प्रमुख बनाकर श्री करणसिंह बछवारी को विस्तार प्रमुख व शाखा संचालन का कार्य सौंपा। कॉलेज व आस-पास के गाँवों में काफी राजपूतों के गाँव थे परन्तु क्षत्रिय युवक संघ क्या है किसी को जानकारी नहीं थी। हमने प्रतिदिन शाखा लगाना, कैम्प में जाना व शक्ति पूजा का विशाल कार्यक्रम किया। शक्ति पूजा में आस-पास गाँव के करीब 250-300 क्षत्रिय लोग आये।

वैसे तो 1958 व 1962 के बीच कई बार साहब से पत्र-व्यवहार हुआ तथा कई बार बचकाना हरकत करने से साहब हमारी शब्दों से ठुकाई करते थे परन्तु जोबनेर में शाखा प्रमुख रहने से मेरे द्वारा कई प्रकार की रिपोर्ट भेजने से, हमारे बीच पत्र व्यवहार ज्यादा होने से एक दूसरे के विचार व स्वभाव से भी परिचित हो गये थे। पत्र व्यवहार में हम रोचक व व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करते थे। पत्रों का आदान प्रदान करने से आनन्द की अनुभूति होती थी। वैसे तो पत्र बहुत लिखे परन्तु साहब के 10-15 पत्र जो मेरे पास हैं। उनका सार निम्न प्रकार है :-

मैंने दिनांक 11.2.63 को एक पत्र साहब को भेजा जिसका जवाब मुझे दिनांक 16.02.63 को मिला। उस पत्र में साहब ने लिखा कि यह तेरी अक्ल का नमूना है कि दो

तीन पत्र तुम्हारे इस पते पर मिले। श्रीमान् तनसिंह जी, MP भवन, 29 रणजीत सिंह रोड़, न्यू दिल्ली। (दिल्ली) यह पता तेरा अविष्कार दिखाता है। यहाँ कोई MP भवन नहीं है। न्यू दिल्ली व दिल्ली दो स्थान नहीं हैं एक ही है। आपके भेजे में बात जम गई हो तो ठीक वर्ना अक्ल को विटामिन-बी की गोलियाँ खिलाना व ग्लूकोज का 100 सी.सी का इंजेक्शन लगाना।

उक्त पत्र के उत्तर में मैने दिनांक 27.02.63 को मेरी गलती मानते हुए माफी माँगी लेकिन इस पत्र में भी मेरी गलती को दौहराते हुये मेरे द्वारा लिखे गये पते में न्यू दिल्ली व दिल्ली लिख दिया तब साहब ने वापिस लिखा कि तुम्हारा बिना तारीख का पत्र मिला। मालूम होता है कि अभी गोलियों ने और इन्जेक्शनों ने पूरा असर नहीं किया है। न्यू दिल्ली व दिल्ली एक ही स्थान है। अब आपके भेजे में बात घुस गई होगी, केवल न्यू दिल्ली ही लिखें। इसके बाद मैंने एक पत्र में लिखा कि आप नाराज हो जाते हो व सिरियस रहते हैं तब साहब ने वापिस पत्र भेज कर लिखा कि मेरा नाराज होना तेरा भ्रम है यह तुम्हारे जैसे बुद्धि के ब्रह्मचारी का केवल भ्रम है। मैं तो चाहता हूँ कि लोग मुझे अपना समझें, दिल खोलकर बातें करें, पत्र व्यवहार करें लेकिन मेरे चाहने से क्या होता है। साहब ने आगे लिखा कि मैं किसी की चोटी पकड़कर वनों की खाक नहीं छनवाता। अपने अन्त:करण का समस्त स्नेह देकर तुम्हारे जैसे उल्लुओं को अपने हृदय में बैठाकर पहले खुद खाक छानता हूँ। तेरे जैसे गधे को भी अपना अत्यन्त प्रिय भाई बनाने वाला क्या कोई ईश्वर का अवतार हो सकता है, वह तो तेरे जैसा बे अकल गधा ही हो सकता है। इसलिए अपने सभी भ्रमों को मिटाकर मन लगाकर पढ़ाई करो व परीक्षा की तैयारी करना।

मैंने एक पत्र में लिखा कि मुझे वरदान व आशीर्वाद दो तब दिनांक 11.03.63 का पत्र साहब ने लिखा कि आज के जमाने में कोई वस्तु मुफ्त में नहीं मिलती। जैसी वस्तु होगी वैसी उसकी कीमत भी होगी। वरदान ले जाओ मेरे पास खूब वरदान हैं परन्तु हर वरदान की फीस है। तुम्हें कैसा वरदान चाहिए ताकि मैं उसकी कीमत भेज सकूँ। मैंने लिखा कि अक्ल के लिए मैंने गोलियाँ व इन्जेक्शन लिए हैं सो आप बिल के पैसे भेजो। साहब ने लिखा-दुकान का बिल भेजना पैसे चुका दूँगा।

दिनांक 22.03.1963 को साहब ने लिखा कि यह तो तुम्हें मालूम ही है कि हर शाखा का शाखा प्रमुख प्रतिमाह तुम अक्ल के दुश्मन की तरह ही पत्र भेजा करता है। अन्य लोगों के भी पत्र आते हैं तो मुझे प्रतिदिन दो घंटे सभी को जवाब देने में लगते हैं। कभी दौरे में चला जाने से फिर मुझे अधिक दिन पत्र देने में लगते हैं। तुमको पत्र देने में देरी क्या हुई तुमने तो कपड़े फाड़ने शुरू कर दिये। पढ़ाई में ध्यान दे फेल हो गया तो नाक काट लिया जावेगा।

दिनांक 05.09.63 के पत्र में साहब ने दो तीन पेज का पत्र लिखा इसमें अंतिम पंक्ति में मुझे सीख देने के लिए लिखा कि हम तो पूर्व जन्मों के सम्बन्धी हैं यह जन्म तो हमने मिलकर काम करने के लिए लिया है। देखता हूँ तू क्या करता है और करते करते कभी इधर भी देख लिया कर कि मैं क्या कर रहा हूँ।

दिनांक 21.03.66 के पत्र में सीख देने के तौर पर मुझे लिखा कि मैं कभी यह अनुभव नहीं करता कि मेरा समाज तथा उसके साधकों पर किसी प्रकार का ऋण है। सच तो यह है कि मैं स्वयं ही सबका अपने आपको ऋणी मानता हूं इसलिए उनकी सेवा के लिए अपने जीवन का एक भी दिन, अपनी शक्ति का एक भी अणु, हृदय का एक भी पवित्र भाव, और द्रव्य का एक भी पैसा छिपा कर नहीं रख पाता। परमेश्वर से मेरी यही प्रार्थना रहती है कि मैं सदा तुम लोगों की सेवा में लगा रहूँ और परमेश्वर तुम लोगों को सुखी और आनंदमय बनावे। कभी कभी पत्र दे दिया करो मैं इसी में ही संतुष्ट हो जाया करता हूँ।

(शेष पृष्ठ 26 पर)

गतांक से आगे

बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास

– खींवसिंह सुलताना

महाराजा अनूप सिंह

महाराजा कर्ण सिंह के ज्येष्ठ पुत्र अनुप सिंह का जन्म वि.सं. 1695 में हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के बाद वह वि.स. 1726 में शासक बना।

अनूप सिंह को दक्षिण में भेजा जाना– मराठों के कारण दक्षिण में मुगलों की स्थिति शोचनीय बनी हुई थी इस कारण औरंगजेब ने महाबत खाँ के साथ अनूपसिंह को दक्षिण में भेजा। दक्षिण में औंध, पट्टा, सतारा, नन्दगिरि, पन्हाला आदि युद्धों में महाराजा अनूपसिंह ने अपनी वीरता का परिचय दिया।

भाटियों पर विजय व अनूपगढ़ का निर्माण– महाराजा अनूपसिंह जब दक्षिण में थे तब खारबारा, रायमलवा लनी के भाटियों ने विद्रोह कर दिया। महाराजा ने मोहता मुकुंदराय, अमर सिंह के नेतृत्व में उन पर सेना भेजी। खारबारा, रायमलवालनी तथा राणीर के भाटियों ने चूडेर के गढ़ में सेना एकत्र कर बीकानेर की सेना का सामना करने का निश्चय किया। बीकानेर की सेना के द्वारा डाले गए घेरे के कारण गढ़ में रसद की कमी हो गई। इससे परेशान भाटियों ने संधिवार्ता प्रारम्भ की, मोहता मुकुन्दराय ने उन्हें आश्वस्त किया जिसके फलस्वरूप भाटियों ने जोहियों व अधिकांश भाटियों को गढ़ से विदा कर दिया, अवसर अनुकूल जानकर मोहता मुकुंदराय अपनी बात से फिर गया और रात्रि में भाटियों पर आक्रमण कर दिया। शक्ति कम होने व अचानक आक्रमण होने से भाटियों को पराजय का सामना करना पड़ा। गढ़ पर बीकानेर का अधिकार हो गया। वि.सं. 1735 में उस स्थान पर एक नए गढ़ का निर्माण किया गया, जिसका नाम अनूपगढ़ रखा गया।

बनमालीदास को मरवाना :– अनूपसिंह के अनौरस (पासवान पुत्र) भाई बनमाली दास ने इस्लाम को स्वीकार कर औरंगजेब से बीकानेर का आधा मनसब अपने नाम करवा लिया। बीकानेर आकर वह मुगल सेना के सहयोग से उपद्रव करने लगा। वह चंगोई के पास गढ़ बनाकर रहने लगा व अनूप सिंह का विरोध करता। तब महाराजा ने बाय के सोनगरा लक्ष्मीदास (अनूप सिंह के ससुर) को युक्ति से बनमालीदास को मरवाने का कार्य सौंपा। योजनानुसार सोनगरा लक्ष्मीदास व राजपुरा के ठाकुर महाराजा अनूप सिंह के विद्रोही के रूप में बनमालीदास के पास पहुँचे। बनमालीदास ने उन्हें अपने पास रख लिया, पूर्व योजना के अनुसार कुछ समय बाद लक्ष्मीदास ने एक दासीपुत्री को अपनी पुत्री बता उसका विवाह बनमालीदास के साथ कर दिया जिसने विवाह की रात ही शराब में जहर मिला कर उसे पिला दिया जिससे बनमालीदास की मृत्यु हो गई ।

बीजापुर और गोलकुण्डा पर औरंगजेब के आक्रमण के समय शहजादों द्वारा उदासीन रहने पर औरंगजेब को जब सफलता नहीं मिल रही थी तब महाराजा अनूप सिंह की वीरता व युद्धचातुर्य के कारण मुगलों को सफलता प्राप्त हुई।

महाराजा अनूप सिंह का विद्यानुराग– महाराजा अनूप सिंह बीकानेर के सभी शासकों की तुलना में अत्यन्त विद्वान व संस्कृत भाषा के ज्ञाता थे। वे न केवल वीर थे वरन एक विद्यानुरागी, संगीतज्ञ भी थे। उन्होंने भिन्न विषयों पर संस्कृत भाषा में 'अनूप विवेक', 'कामप्रबोध', गीतगोविन्द की 'अनूपोदय' नामक टीका आदि ग्रन्थ

लिखे। उनके आश्रय में विद्यानाथ सूरि ने 'ज्योत्पत्तिसार', मषिरा ने 'अनूप व्यवहार सागर' (ज्योतिष), अनन्त भट्ट ने 'तीर्थ रत्नाकर' ग्रन्थों का निर्माण किया। औरंगजेब की धर्मान्धिता के कारण अनेक संगीतवेताओं ने महाराजा अनूप सिंह के पास आश्रय लिया। भावभट्ट ने संगीत पर 'संगीत अनूपांकुश 'अनूप संगीत विलास', 'अनूप संगीत रत्नाकर' आदि ग्रन्थों की रचना की।

महाराजा अनूप सिंह की मृत्यु– वि.सं 1755 में दक्षिण में ही महाराजा का स्वर्गवास हो गया। महाराजा अनूप सिंह वीर, राजनीतिज्ञ, दयालु व विद्याप्रेमी थे। बादशाह की तरफ से उनकी वीरता के कारण उन्हें 'माही मरातिब' का सम्मान मिला था। औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों के कारण प्रताड़ित विद्वानों को उन्होंने आश्रय दिया।

महाराजा कर्ण सिंह के अन्य पुत्र– महाराजा कर्ण सिंह के पुत्रों में अनूप सिंह के अलावा केसरी सिंह, पद्म सिंह व मोहन सिंह भी अपने पराक्रम के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हैं।

केसरी सिंह– केसरी सिंह का जन्म कछवाही रानी के गर्भ से हुआ था। कहा जाता है कि केसरी सिंह ने एक सिंह को निहत्थे ही अपने हाथों से चीर डाला था जिस पर प्रसन्न होकर औरंगजेब ने उन्हें 25 गाँव जागीर में दिए। दक्षिण में एक युद्ध के दौरान उन्होंने हब्शी सरदार (बहमनी सेना में अधिकारी) जो अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध था को तलवार के एक ही वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। दक्षिण में ही एक युद्ध के दौरान वो वीरगति को प्राप्त हुए।

पदम सिंह– वह महाराजा कर्ण सिंह की हाडी रानी स्वरूप दे के गर्भ से पैदा हुआ। पदम सिंह की वीरता की कहानियाँ इतिहास प्रसिद्ध है। शहजादे शुजा के विरुद्ध खजवा के युद्ध में पदम सिंह व केसरी सिंह ने अतुलनीय शौर्य का प्रदर्शन किया। युद्ध में विजयी होकर जब वे आए तब बादशाह औरंगजेब ने खुद अपने रूमाल से उनके बख्तरों की धूल को झाड़ा।

औरंगाबाद के किले में उनके छोटे भाई मोहन सिंह का झगड़ा किसी बात पर शहजादे मुअज्जम के साले से हो गया। शहजादे के साले मुहम्मदशाह मीर तोजक ने अकेले मोहन सिंह को घेर कर उन पर आक्रमण कर दिया। दीवानखाने में अनेक शत्रुओं को मारकर खुद मोहन सिंह भी मारा गया। पदम सिंह जो अपने डेरे में थे, उनको जैसे ही यह सूचना मिली वे तुरन्त दीवानखाने पहुँचे। उनका रोद्र रूप देखकर शहजादा व अन्य सैनिक भाग गए। मुहम्मदशाह भीर तोजक पत्थर के एक बड़े खंभे के पीछे छिप गया। पदम सिंह ने जब उसे वहाँ देखा तो उन्होंने उस पर तलवार का ऐसा वार किया कि तलवार उसके शरीर को दो भागों में बांटते हुए उस पत्थर के खम्भे से टकराई और पत्थर को भी काट डाला। पदम सिंह दक्षिण में ताप्ति (तापी) नदी के तट पर हुए मराठों से युद्ध में, मराठो के सांवतराय, जादूराय आदि अनेक प्रसिद्ध मराठा वीरों को मार कर वीरगति को प्राप्त हुए।

महाराजा स्वरूप सिंह

महाराजा अनूप सिंह के ज्येष्ठ पुत्र स्वरूप सिंह का जन्म वि.सं 1746 में हुआ था। मात्र नौ वर्ष की आयु में स्वरूप सिंह बीकानेर के शासक बने उनके अल्पायु होने के कारण शासन कार्य उनकी माता सीसोदणी जी चलाती थी। उस समय बीकानेर के प्रमुख सरदारों के दो दल बन गए थे, उन दोनों दलों के आपसी षड़यंत्रों में कई प्रमुख व्यक्ति मारे गए। इन परिस्थितियों में वि.सं. 1757 में मात्र 11 वर्ष की आयु में महाराजा स्वरूप सिंह का निधन हो गया।

(क्रमशः)

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

अन्तिम अभिलाषा

नाथ तव चरण शरण चित्त लाया।
माया मोह के कूप पड़ा था, मिथ्या भ्रमहि भुलाया।।
काम क्रोध मद लोभ मोह ने, मो मति को भरमाया।
महा कुटिल मोह जाल जगत का, फंदा डाल फंसाया।।
चेत्ता चित्त अचेत तब, ज्ञान मार्ग दरसाया।
क्षत्रियोचित व्रत चहत हूँ! तव पद-रज की छाया।।

दोहा

तब चरण चित रु देश हित, उर साहस असि हाथ।
क्षात्र धर्म भव भक्ति पथ, अचल देहुँ यदुनाथ।।

– गोपाल सिंह खरखा

महाप्रयाण का अद्‌भुत दृश्य

प्रत्यक्षदर्शी डॉ. अम्बालाल शर्मा द्वारा–

''राव गोपालसिंह जी कृष्ण के अनन्य भक्त थे। पिछले आठ वर्ष उन्होंने वीतराग साधु की भाँति कभी पुष्कर में तो कभी खरवा के बाहर बने एकान्त स्थान में रहकर भगवत स्मरण में बिताए। अपनी जवानी के दिनों में वे उग्र राजनीति को मानने वाले थे। देश की स्वाधीनता हेतु महान् ब्रिटिश गवर्मेन्ट से भिड़ गए थे। देशहित में बहुत कुछ कष्ट उठाए एवं खरवा राज्य का भी उन्हें त्याग करना पड़ा। अब उनकी मृत्यु की पुण्यमयी कथा सुनाता हूँ।

मृत्यु के लगभग दो माह पूर्व उनके शरीर में उदर विकार के लक्षण प्रकट हुए। मैंने एक्स-रे द्वारा परीक्षा कराई एवं निश्चय हुआ कि उनको आँतों का कैन्सर है। वेदना इतनी भयंकर थी कि मारफिया के इंजेक्शन से भी कोई आराम नहीं मिलता था। किन्तु उस भीषण वेदना में भी मन को आश्चर्यजनक रूप से एकाग्र करके श्री कृष्ण के ध्यान में नियमपूर्वक बैठते थे एवं जितने समय वे ध्यान में रहते थे, वेदना की रेखा उनके ललाट पर जरा भी नहीं रहती थी। इस बुढ़ापे में 66 वर्ष की आयु में दो महीने तक कुछ न खाकर भी उनमें तेज और साहस की कमी नहीं हुई थी।

मृत्यु के चार दिन पूर्व रोग के विष के कारण उन्हें हिचकी और वमन शुरू हो गई थी। पिछले चार दिनों से तो एक चम्मच पानी भी उनके पेट में न जा सका, किन्तु श्री कृष्ण का ध्यान तब भी न छूटा। मृत्यु के पहले दिन सायंकाल के समय मैंने उनसे निवेदन किया कि यदि आपको कोई वसीयत करनी हो तो शीघ्र कर लें। विष (Taxemia) के कारण आप रात्रि में मूर्छा की अवस्था में पहुँच जावेंगे। वे कहने लगे-''यह असम्भव है कि गोपालसिंह कायर की मौत मर जाय। मौत से भी चार हाथ होंगे। आप देखते जाइये भगवान श्री बाल कृष्ण क्या करते हैं।'' उसी समय उन्होंने अपने पास रहने वाले भजन गायक बिहारी को कहा कि डॉक्टर साहब को भीष्म प्रतिज्ञा वाला वह भजन सुनाओ। ''आज जो हरि ही न शस्त्र गहाऊं। तो लाजौ गंगा जननी को, शान्तनु सुत न कहाऊं।'' कैसा दृढ़ आत्मविश्वास और कैसी गजब की निष्ठा थी उनमें।

मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब दूसरे दिन प्रात: काल पाँच बजे मैं उठा। मैंने उन्हें ध्यान में बैठे देखा। ध्यान पूरा होने पर वे कहने लगे– ''डाक्टर साहब आज हिचकी बन्द है। दस्त भी स्वत: एक महीने बाद आज ही हुई है। मैं बहुत अच्छा हूँ, हल्का हूँ।'' मैंने एक डॉक्टर की तरह कहा– ''ईश्वर करे आप अच्छे हो जायें।'' वे कहने लगे कि– ''अब शरीर नहीं रहेगा किन्तु, भगवान के ध्यान में विघ्न न हो, इसलिए श्रीकृष्ण ने ये बाधाएँ दूर कर दी हैं।''

करीब दस बजे मैं आया तो देखा कि उनकी नाड़ी जा रही है। मैंने कहा– ''राव साहब! अब करीब आधा घंटा

शेष है।'' राव साहब कहने लगे- ''नहीं अभी तो पांच घण्टा समय शेष है, घबराएं नहीं।'' सवा दो बजे मैं पहुँचा, नमस्ते किया। उनके सेक्रेट्री पास बैठे गीता पढ़ रहे थे। मुझसे कहा- ''आप गीता सुनाइये'' जब वे गीता सुन रहे थे तो उनका मस्तिष्क कितना स्वच्छ था, उस समय कहीं-कहीं किसी पद का अर्थ पूछ लेते थे। ठीक मृत्यु से पाँच मिनट पहले वे आसन पर बैठ गए- गंगाजल पान किया, तुलसी पत्र लिया। गंगाजी की रेती (मिट्टी) का ललाट पर लेप किया एवं वृन्दावन से मंगाई रज सर पर रखी व हाथ जोड़कर ध्यान करने लगे। सहसा बोल उठे-कहने लगे- ''डॉक्टर साहब! अब आप लोग नहीं दिख रहे हैं। श्री कृष्ण दिख रहे हैं। ये श्री कृष्ण खड़े हैं। मैं इनके चरणों में लीन हो रहा हूँ। हरि औम तत्सत-हरि औम-बस एक सैकण्ड''- महाप्रस्थान हो गया। हम सब विस्फारित नेत्रों से देखते रह गए। धन्य आधुनिक भीष्म! धन्य मृत्युंजय! धन्य-तुम्हारी इस मौत पर दुनिया की बादशाहत कुरबान है।''

(कल्याण की गीता तत्त्वांक)

पहली भेंट आचार्य चतुरसेन शास्त्री की

प्रसिद्ध देशभक्त खरवा के राव गोपालसिंह राष्ट्रवर दिल्ली पधारे थे। उनके दिल्ली पहुँचने पर जब मैं मिलने गया और कमरे में प्रवेश किया तो देखा एक भारी-भरकम रुईदार काले खद्दर का लवादा ओढ़े एक धीर गम्भीर पुरुष बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। मेरे प्रवेश करते ही आप खड़े हो गए व हाथ मिलाया। बैठने पर बातों का तार लग गया। ऐसा लगा मानो किसी पूर्व परिचित मित्र से मिलना हुआ हो। वह उनकी सादगी और सरल चित्त की करामात थी। उनसे मिलने वाला कोई भी व्यक्ति उनसे कुछ देर बात करते ही जान जाता है उनमें कितना देशोन्माद भरा हुआ है। ''संजीवन'' के पाठक जानते हैं कि उनके देशोन्माद के कारण सरकार आप पर रूठी बैठी है। पर आपकी मस्ती में जरा भी अन्तर नहीं है। अवस्था 45 के लगभग, शरीर सुदृढ़ एवं दर्शनीय, आँखें गूढ़, आरक्त, मूंछे घनी, भौंहें टेढ़ी, चेहरे की तराछ में राजपूती बांकपन है। जल्दी-जल्दी बोलते हैं। हिन्दी, अंग्रेजी और मारवाड़ी सरलता से बोल जाते हैं।

शरीर का हाल पूछने पर फरमाया कि 10 वर्षों से निरन्तर कष्ट सहन करते-करते शरीर चूर हो चुका है, पर शरीर की चिन्ता करने की मुझे फुर्सत नहीं है। ''क्या आपने कानपुर वाली मेरी स्पीच पढ़ी है?'' मैंने कहा स्पीच तो नहीं पढ़ी, किन्तु मौलाना शौकत अली ने आपकी तलवार का उपहास किया है, वह पढ़ा है। आपने उत्सुकता से पूछा- कैसा उपहास? मौलाना तो मेरे भाई हैं। मैंने कहा उन्होंने बम्बई में स्पीच देते हुए कहा था- ''राव साहब, राणा प्रताप की जंग लगी तलवार को फिजूल चमकाते हैं,; पर उनसे कुछ होगा नहीं।'' आप बोले- ''कुछ होगा या नहीं-यह बात कौन जानता है। पर मेरे हाथ में जब तक यह तलवार है उसे चमकाना मेरे लिए प्रतिष्ठा का कारण है और यह तो सोच ही नहीं सकता कि कभी उसमें जंग लग सकता है।''

यू.पी. और राजपूताना के लोगों की चर्चा छिड़ने पर आपने कहा राजपूताना की अपेक्षा यू.पी. के लोग अधिक योग्य और चुस्त चालाक होते हैं। पर उनकी योग्यता बदमाशी के रूप में काम आती है। आपने यू.पी. के तिलहर स्थान पर अपनी नजरबन्दी के समय का जिक्र करते हुए बताया कि वहाँ के लोग जूता, लोटा और उससे भी छोटी वस्तुएँ चुराकर ले जाते थे। राजपूताना में दो बातों का आपने अभाव बतलाया। एक योग्यता का दूसरा आत्म-त्याग का। आत्म-त्याग का एक छलकता- सा उदाहरण आपने ईडर राज्य के एक ग्रामीण राजपूत का दिया- ''बादशाही जमाना था। शाही फौज गाँव के निकट पड़ाव डाले पड़ी थी। कुछ सिपाही खाद्य वस्तुओं की तलाश में गाँव में घुस आए। एक राजपूत के घर से दही की हांडी औरतों के इन्कार करने पर भी उठाकर ले गए। मर्द घर पर न था। जब राजपूत घर पर आया तो सब समाचार सुना। तत्काल खूंटी से तलवार उतारकर फौज के पड़ाव की तरफ चल पड़ा। लोगों ने

समझाया कि क्यों जरा सी बात पर झगड़ा मोल लेते हो। उसने कहा बात जरा सी नहीं; आज ये दही ले गए-कल मेरी स्त्री को भी ले जायेंगे। दही की जरूरत थी तो मांग कर ले जाते। जोर जबरदस्ती से तिनका भी नहीं दूँगा। थोड़ी ही देर में राजपूत दही की हांडी लेकर लौटा, उसकी तलवार से खून टपक रहा था। हांडी घर में रखकर उसने पड़ौसी ब्राह्मण को बुलाया, अपने 10 वर्ष के बालक का हाथ उसे पकड़ा कर कहा-इसे तुम पालना, फिर उसने अपना सर्वस्व दान कर दिया और अपनी पत्नी का सिर भी काट दिया। इतने में ही उनका पीछा करते हुए सिपाही आ गए और क्षण भर बाद राजपूत का शरीर भूमि पर लौटने लगा। इस घटना को सुनाकर राव साहब ने एक लम्बी सांस ली और कहा-''वह मारवाड़, अब ऐसा सोया है कि कहने की बात नहीं।''

महात्मा गाँधी के अहिंसक असहयोग आंदोलन का प्रसंग छिड़ने पर आपने कहा-मैं तो हमेशा यही कहता रहा हूँ, कि युरोप का चतुर बनिया (अंग्रेज) आँसू से नहीं पिघलेगा। उसे तो भय ही डरा सकता है। भय-भूत बनो भयभीत नहीं। खद्दर मैं पहनता हूँ। इस देश के वासियों के लिए यह बड़ी उपयोगी है। छुआछूत के बारे में आपने कहा-छूत के भूत को भोजन में आनन्द क्यों आता होगा। राजपूताना के लोगों ने इस मामले में हमेशा उदारता बरती है। आठ पूरबिया नौ चूल्हा वाला प्रयोग यहाँ कभी नहीं हुआ। भीलों, मीणों और मेहरातों की पत्नियों से लूखी-सूखी मक्की की रोटियाँ खाकर हमारे पूर्वजों ने खुशी से दिन बिताए हैं। वहाँ भला छुआछूत की भावना कहाँ से आती।

(संजीवन पुत्र के एक अंक से उद्धृत)

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

(क्रमशः)

साभार- **राव गोपालसिंह खरवा**

लेखक- **सुरजन सिंह झाझड़**

पृष्ठ 21 का शेष

श्रद्धेय श्री तनसिंह जी : मेरे प्रेरणा के स्रोत

दिनांक 08.03.66 को मेरे लिए साहब ने लिखा कि-तुम जैसे भी हो, जिसके नसीब में जैसे मिल गये उनसे अच्छे मिल भी तो नहीं सकते इसलिए जैसे भी हो, उन्हें अद्वितीय, अनुपम और अतुलनीय मानकर जीवन जीना ही जीवन की श्रेष्ठतम कला है।

मैंने साहब को पत्र लिखा उस लिफाफे में एक खाली अन्तर्देशीय पत्र पर मेरा पता लिखकर लिफाफे में डालकर यह सोचकर भेजा कि साहब हजारों को पत्र लिखते हैं तो स्टाम्प का खर्चा उनके न लगे। तब साहब ने लिखा कि-खैर पत्र से मिलना भी क्या कम है फिर मजा यह है कि भेजने वाला खुद ही जवाब के लिए टिकट लगा कागज साथ में ही डाल देता है। जनाब आपकी इतनी ही कृपा कम नहीं है कि आप पत्र डालते रहो। यह पोस्टेज का जो ऋण चढ़ा रहे हो, हमें डर है कहीं वापिस ही न चुकाया गया तो कैसा होगा मेरा स्नेह पूर्ण आशीर्वाद!

1964 में मेरी नौकरी सी.आई.डी पुलिस में लग जाने से पहले दो साल तक छुट्टी नहीं मिली फिर एक साल ट्रेनिंग की वजह से मैं कैम्पों व शाखा में नहीं जा सका, तब मैं पत्रों के माध्यम से ही सम्पर्क करता रहा। हमारे आदरणीय, श्रद्धेय व हमारे प्रेरणा के स्रोत हम लोगों के लिये कितने त्यागी, ध्यानी और राजपूत कौम के लिये अपना पूरा जीवन समर्पित करके हमें मझधार में छोड़कर अलविदा व टाटा बोल कर हमेशा के लिये विदा हो गये। हम उनकी देव आत्मा को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

तुलसी का भक्ति मार्ग

– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

भक्ति-रस का पूर्ण परिपाक जैसा तुलसीदास जी में देखा जाता है वैसा अन्यत्र नहीं। भक्ति में प्रेम के अतिरिक्त आलम्बन के महत्त्व और अपने दैन्य का अनुभव परम आवश्यक अंग है। तुलसी के हृदय से इन दोनों अनुभवों के ऐसे निर्मल शब्द-स्रोत निकले हैं, जिनमें अवगाहन करने से मन की मैल कटती है और अत्यन्त पवित्र प्रफुल्लता आती है। गोस्वामी जी के भक्ति-क्षेत्र में शील, शक्ति और सौन्दर्य तीनों की प्रतिष्ठा होने के कारण मनुष्य की सम्पूर्ण भावात्मिका प्रकृति के परिष्कार और प्रसार के लिए मैदान पड़ा हुआ है। वहाँ जिस प्रकार लोक-व्यवहार से अपने को अलग करके आत्म-कल्याण की ओर अग्रसर होने वाले काम, क्रोध आदि शत्रुओं से बहुत दूर रहने का मार्ग पा सकते हैं, उसी प्रकार लोक-व्यवहार में मग्न रहने वाले अपने भिन्न-भिन्न कर्त्तव्यों के भीतर ही आनन्द की वह ज्योति पा सकते हैं जिससे इस जीवन में दिव्य जीवन का आभास मिलने लगता है और मनुष्य के वे सब कर्म, वे सब वचन और वे सब भाव-क्या डूबते हुए को बचाना, क्या अत्याचारों पर अस्त्र चलाना, क्या स्तुति करना, क्या निन्दा करना, क्या दया से आर्द्र होना, क्या क्रोध से तमतमाना जिनसे लोक का कल्याण होता आया है, भगवान् के लोक पालन करने वाले कर्म, वचन और भाव दिखाई पड़ते हैं।

यह प्राचीन भक्ति-मार्ग एकदेशीय आधार पर स्थित नहीं, यह एकांगदर्शी नहीं। यह हमारे हृदय को ऐसा नहीं करना चाहता कि हम केवल व्रत-उपवास करने वालों और उपदेश करने वालों पर ही श्रद्धा रखें और जो लोग संसार के पदार्थों का उचित उपभोग करके अपनी विशाल भुजाओं से रणक्षेत्र में अत्याचारियों का दमन करते हैं, या अपनी अन्तर्दृष्टि की साधना और शारीरिक अध्यवसाय के बल से मनुष्य- 'जाति के ज्ञान की वृद्धि करते हैं, उनके प्रति उदासीन रहें। गोस्वामी जी की रामभक्ति वह दिव्य वृति है, जिससे जीवन में शक्ति, सरसता, प्रफुल्लता, पवित्रता, सब कुछ प्राप्त हो सकती है। आलम्बन की महत्त्व-भावना से प्रेरित दैन्य के अतिरिक्त भक्ति के और जितने अंग हैं-भक्ति के कारण अन्तःकरण की जो और-और शुभ वृत्तियाँ प्राप्त होती हैं सबकी अभिव्यंजना गोस्वामी जी के ग्रन्थों के भीतर हम पा सकते हैं। राम में सौन्दर्य, शक्ति और शील तीनों की चरम अभिव्यक्ति एक साथ समन्वित होकर मनुष्य के सम्पूर्ण हृदय को-उसके किसी एक ही अंश को नहीं-आकर्षित कर लेती है। कोरी साधुता का उपदेश पाखण्ड है, कोरी वीरता का उपदेश उद्दण्डता है, कोरे ज्ञान का उपदेश आलस्य है और कोरी चतुराई का उपदेश धूर्तता है।

सूर और तुलसी को हमें उपदेशक के रूप में न देखना चाहिए। वे उपदेशक नहीं हैं, अपनी भावुकता और प्रतिभा के बल से लोक-व्यापार के भीतर भगवान् की मनोहर मूर्ति प्रतिष्ठित करने वाले हैं। हमारा प्राचीन भक्ति-मार्ग उपदेशको की सृष्टि करने वाला नहीं है। सदाचार और ब्रह्मज्ञान के रूखे उपदेशों द्वारा इसके प्रचार की व्यवस्था नहीं है। न भक्तों के राम और कृष्ण उपदेशक, न उनके अनन्य भक्त तुलसी और सूर। लोक-व्यवहार में मग्न होकर जो मंगल-ज्योति इन अवतारों ने उसके भीतर जगाई, उसके माधुर्य का अनेक रूपों में साक्षात्कार करके मुग्ध होना और मुग्ध करना ही इन भक्तों का प्रधान व्यवसाय है। उनका शस्त्र भी मानव-हृदय है और लक्ष्य भी। उपदेशों का ग्रहण ऊपर-ही-ऊपर से होता है। न वे हृदय के मर्म को ही भेद सकते हैं, न बुद्धि की कसौटी पर ही स्थिर भाव से जमे रह सकते हैं। हृदय तो उसकी ओर मुड़ता ही

नहीं और बुद्धि उनको लेकर अनेक दार्शनिक वादों के बीच जा उलझती है। उपदेशवाद या तर्क गोस्वामी जी के अनुसार ''वाक्यज्ञान'' मात्र कराते हैं, जिससे जीव कल्याण का लक्ष्य पूरा नहीं होता –

वाक्य–ज्ञान अत्यन्त निपुन भव पार न पावै कोई ।
निसि गृह मध्य दीप की बातन तम निवृत्त नहि होई।।

'वाक्य–ज्ञान' और बात है, अनुभूति और बात। इसी से प्राचीन परम्परा के भक्त लोग उपदेश, वाद या तर्क की अपेक्षा चरित्र–श्रवण और चरित्र–कीर्तन आदि का ही अधिक नाम लिया करते हैं।

प्राचीन भागवत सम्प्रदाय के बीच भगवान् के उस लोक रंजनकारी रूप की प्रतिष्ठा हुई, जिसके अवलम्बन से मानव–हृदय अपने पूर्ण भावसंघात के साथ कल्याण– मार्ग की ओर आपसे आप आकर्षित हो सके। इसी लोक रंजनकारी रूप का प्रत्यक्षीकरण प्राचीन परम्परा के भक्तों का लक्ष्य है; उपदेश देना नहीं। उसी मनोहर रूप की अनुभूति से गद्‌गद् और पुलकित होना उसी रूप की एक–एक छटा को औरों के सामने भी रखकर उन्हें मानव–जीवन के सौन्दर्य–साधन में प्रवृत्त करना, भक्तों का काम है।

गोस्वामीजी ने अनन्त सौन्दर्य का साक्षात्कार करके उसके भीतर ही अनन्त शक्ति और अनन्त शील की वह झलक दिखाई है जिसके प्रकाश में लोक का प्रमोदपूर्ण परिचालन हो सकता है। सौंदर्य, शक्ति और शील, तीनों में मनुष्य मात्र के लिए आकर्षण विद्यमान है। रूप–लावण्य के बीच प्रतिष्ठित होने से शक्ति और शील को और भी अधिक सौन्दर्य प्राप्त हो जाता है, उनमें एक अपूर्व मनोहरता आ जाती है। जिसे शक्ति–सौन्दर्य की झलक मिल गयी, उसके हृदय में सच्चे वीर होने की अभिलाषा जीवन भर के लिए जग गई, जिसने शील, सौन्दर्य की यह झाँकी पाई उसके आचरण पर इसके मधुर प्रतिबिम्ब की छाप बैठीं। प्राचीन भक्ति के इस तत्त्व की ओर ध्यान न देकर जो लोग भगवान् की लोकमंगल विभूति के द्रष्टा तुलसी को कबीर, दादू आदि की श्रेणी में रखकर देखते हैं, वे बड़ी भारी भूल करते हैं।

अनन्त शक्ति–सौंदर्य–समन्वित अनन्त शील की प्रतिष्ठा करके गोस्वामीजी को पूर्ण आशा होती है कि उसका आभास पाकर जो पूरी मनुष्यता को पहुँचा हुआ हृदय होगा वह अवश्य द्रवीभूत होगा–

सुनि सीतापति शील सुभाउ।
मोद न मन, तन पुलक, नयन जल सो नर खेहर खाउ।।

इसी हृदय पद्धति द्वारा ही मनुष्यों में शील और सदाचार का स्थाई संस्कार जम सकता है। दूसरी कोई पद्धति है ही नहीं। अनन्त शक्ति और अनन्त सौंदर्य के बीच से अनन्त शील की आभा फूटती देख जिसका मन मुग्ध न हुआ, जो भगवान् की लोकरंजन मूर्ति के मधुर ध्यान में कभी लीन न हुआ, उस की प्रकृति की कटुता बिल्कुल नहीं दूर हो सकती ।

सूर, सुजान, सपूत, सुलच्छन, गनियत गुन गरुआई।
बिनु हरिभजन इंदारुन के फल, तजत नहीं करुआई।।

चरम महत्त्व के इस भव्य–मनुष्य–ग्राह्य रूप के सम्मुख भावविह्वल भक्त–हृदय के बीच जो–जो भाव–तरंगें उठती हैं, उन्हीं को माला विनय–पत्रिका है। महत्त्व के नाना रूप और इन भाव–तरंगों की स्थिति परस्पर बिम्ब–प्रतिबिम्ब समझनी चाहिए। भक्ति में दैन्य, आशा, उत्साह, आत्म–ग्लानि, अनुताप, आत्म–निवेदन आदि की गंभीरता उस महत्त्व की अनुभूति की मात्रा के अनुसार समझिए। महत्त्व का जितना ही सान्निध्य प्राप्त होता जाएगा–उसका जितना ही स्पष्ट साक्षात्कार होता जाएगा–उतना ही अधिक स्फुट भावों का विकास होता जाएगा, और इन पर भी महत्त्व की आभा चढ़ती जाएगी। मानो वे भाव महत्त्व की ओर बढ़ते जाते हैं और महत्त्व इन भावों की ओर बढ़ता जाता है। इस प्रकार लघुत्व का महत्त्व में लय हो जाता है।

सारांश यह है कि भक्ति का मूल तत्त्व है महत्त्व की

अनुभूति। इस अनुभूति के साथ ही दैन्य अर्थात् अपने लघुत्व की भावना का उदय होता है। इस भावना को दो ही पंक्तियों में गोस्वामी जी ने बड़े ही सीधे-सादे ढंग से व्यक्त कर दिया है-

राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो?

प्रभु के महत्त्व के सामने होते ही भक्त के हृदय में अपने लघुत्व का अनुभव होने लगता है। उसे जिस प्रकार प्रभु का महत्त्व वर्णन करने में आनन्द आता है, उसी प्रकार अपना लघुत्व-वर्णन करने में भी। प्रभु की अनन्त शक्ति के प्रकाश में उसकी असामर्थ्य का, उसकी दीन दशा का बहुत साफ चित्र दिखाई पड़ता है, और वह अपने जैसा दीन-हीन संसार में किसी को नहीं देखता। प्रभु के अनन्त शील और पवित्रता के सामने उसे अपने में दोष-ही-दोष और पाप-ही-पाप दिखाई पड़ने लगते हैं। इस अवस्था को प्राप्त भक्त अपने दोषों, पापों और त्रुटियों को अत्यन्त अधिक परिमाण में देखता है और उनका जी खोलकर वर्णन करने में बहुत कुछ सन्तोष लाभ करता है। दम्भ, अभिमान, छल, कपट आदि में से कोई उस समय बाधक नहीं हो सकता। इस प्रकार अपने पापों की पूरी सूचना देने से जी का बोझ ही नहीं, सिर का बोझ भी कुछ हल्का हो जाता है। भक्त के सुधार का भार उसी पर न रहकर बॅट-सा जाता है।

ऐसी उच्च मनोभूमि की प्राप्ति, जिसमें अपने दोषों को झुक-झुककर देखने ही की नहीं, उठा-उठाकर दिखाने की भी प्रवृत्ति होती है; ऐसी नहीं जिसे कोई कहे कि यह कौन बड़ी बात है। लोक की सामान्य प्रवृत्ति तो प्रायः इसके विपरीत ही होती है, जिसे अपनी ही मानकर गोसाई जी कहते हैं-

जानत हू निज पाप जलधि जिय,
जल-सीकर सम सुनत लरौं।
रज सम पर-अवगुन सुमेरु करि,
गुन गिरि सम रज तें निदरौं।।

ऐसे वचनों के सम्बन्ध में यह समझ रखना चाहिए कि ये दैन्य भाव के उत्कर्ष की व्यंजना करने वाले उद्गार है। ऐतिहासिक खोज की धुन में इन्हें आत्म-वृत्त समझ बैठना ठीक न होगा। इन शब्द-प्रवाहों में लोक की सामान्य प्रवृत्ति की व्यंजना हो जाती है, इससे इनके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने दोषों और बुराइयों की ओर दृष्टि ले जाने का साहस प्राप्त कर सकता है। दैन्य भक्तों का बड़ा भारी बल है।

परम महत्त्व के सान्निध्य से हृदय में उस महत्त्व में लीन होने के लिए जो अनेक प्रकार के आन्दोलन उत्पन्न होते हैं, वे ही भक्तों के भाव हैं। कभी भक्त अनन्त रूपराशि के अनुभव से प्रेम-पुलकित हो जाता है, कभी अनन्त शक्ति की झलक पाकर आश्चर्य और उत्साह से पूर्ण होता है, कभी अनन्त शील की भावना से अपने कर्मों पर पछताता है और कभी प्रभु के दया दाक्षिण्य को देख मन में इस प्रकार का ढाढ़स बाँधता है-

कहा भयो जो मन मिलि कलिकालहि कियों भौंतुवा भौंर को है।
तुलसिदास सीतल नित एहि बल, बड़े ठेकाने ठौर को है।।

दिन-रात स्वामी के पास रहते-रहते जिस प्रकार सेवक की कुछ धड़क खुल जाती है, उसी प्रकार प्रभु के सतत् ध्यान से जो सान्निध्य की अनुभूति भक्त के हृदय में उत्पन्न होती है, उसके कारण वह कभी-कभी मीठा उपालंभ भी देता है।

भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं रह जाता। भक्ति के बदले में उत्तम गति मिलेगी, इस भावना को लेकर भक्ति हो ही नहीं सकती। भक्त के लिए भक्ति का आनंद ही उसका फल है। वह शक्ति, सौन्दर्य और शील के अनन्त समुद्र के तट पर खड़ा होकर लहरें लेने में ही जीवन का परम फल मानता है।

गोस्वामी जी एक बार वृन्दावन गए थे। वहाँ किसी कृष्णोपासक ने उन्हें छेड़कर कहा-''आपके राम तो बाहर ही कला के अवतार हैं। आप श्रीकृष्ण की भक्ति क्यों नहीं करते

जो सोलह कला के अवतार हैं?'' गोस्वामी जी बड़े भोलेपन के साथ बोले– ''हमारे राम अवतार भी हैं, यह हमें आज मालूम हुआ।'' राम भगवान् के अवतार हैं इससे उत्तम फल या उत्तम गति दे सकते हैं, बुद्धि के इस निर्णय पर तुलसी राम से भक्ति करने लगे हों, यह बात नहीं है। राम तुलसी को अच्छे लगते हैं, उनके प्रेम का यदि कोई कारण है तो यही।

जौ जगदीश तौ अति भलो, जौ महीस तौ भाग।
तुलसी चाहत जनम भरि, रामचरन अनुराग।।

तुलसी को राम का लोकरंजन रूप वैसा ही प्रिय लगता है जैसा चातक को मेध का लोकसुखदायी रूप। राम प्रिय लगने लगे, राम की भक्ति प्राप्त हो गई, इसका पता कैसे लग सकता है? इसका लक्षण है मन का आप से आप सुशीलता की ओर ढल पड़ना–

तुम अपनायो, तब जनिहौं जब मन फिर परिहै।

इस प्रकार शील को राम–प्रेम का लक्षण ठहराकर गोस्वामी जी ने अपने व्यापक भक्ति–क्षेत्र के अन्तर्भूत कर लिया है।

भक्त यही चाहता है कि प्रभु के सौंदर्य, शक्ति आदि की अनन्तता की जो मधुर भावना है वह अबाध रहे–उसमें किसी भी प्रकार की कसर न आने पाए। अपने ऐसे पापी की सुगति को वह प्रभु की शक्ति का एक चमत्कार समझता है। अतः उसे यदि सुगति न प्राप्त हुई तो उसे इसका पछतावा न होगा, पछतावा होगा इस बात का कि प्रभु की अनन्त शक्ति की भावना बाधित हो गई–

नाहिन नरक परत मो कहें डर जद्यपि हौं अति हारो।
यहि बड़ि त्रास दास तुलसी कहें नामहु पाप न जारो।।

प्रभु के सर्वगत होने का ध्यान करते–करते भक्त अन्त में जाकर उस अवस्था को प्राप्त करता है जिसमें वह अपने साथ–साथ समस्त संसार को उस एक अपरिछिन्न सत्ता में लीन होता हुआ देखने लगता है, और दृश्य भेदों का उसके ऊपर उतना जोर नहीं रह जाता। तर्क या युक्ति ऐसी अवस्था की सूचना भर दे सकती है–''वाक्य–ज्ञान'' भर करा सकती है। संसार में परोपकार और आत्मा–त्याग के जो उज्ज्वल दृष्टान्त कहीं–कहीं दिखाई पड़ा करते हैं, वे इसी अनुभूति मार्ग में कुछ–न–कुछ अग्रसर होने के हैं। यह अनुभूति–मार्ग या भक्तिमार्ग बहुत दूर तक तो लोक–कल्याण की व्यवस्था करता दिखाई पड़ता है; पर और आगे चलकर यह निस्संग साधक को सब भेदों से परे ले जाता है।

●

सभी सुन्दर, एकान्त और रम्य स्थानों पर भगवान के मन्दिरों को देखकर लगता है भगवान पहले ही लोगों की भीड़–भाड़ से विरक्त होकर संसार में रहने योग्य स्थानों पर बस गये थे। इस प्रकार सृष्टि में जहाँ कहीं मनोरम स्थान था भगवान ने अपने लिए चुना, पर अब लगता है वहाँ पर लगातार भक्तों ने अपनी उछल–कूद के द्वारा भगवान को पूरे ऐशो आराम में रखने के लिये विलास की सामग्रियाँ जुटानी शुरू की, फलस्वरूप वहाँ से भगवान कूच कर चुके हैं। आज तो मन्दिरों में केवल मूर्तियाँ रह गई दिखती हैं, केवल कोलाहल पड़ा है, शान्ति लद चुकी है। वहाँ ईश्वर की मूर्तियाँ भूत बनी भक्त को पहचानने की कोशिश कर रही है और सच्चे भक्त को तो केवल यही कहती है कि तुम भी कैसे अजीब भक्त हो जो भगवान के गायब हो जाने पर यहाँ आए हो।

– पू. तनसिंह जी

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

चिजामी (नागालैण्ड)

नारी सशक्तिकरण का अनुपम उदाहरण

नागालैण्ड को पूरब का स्विटजरलैण्ड कहा जाता है। यह भूमि है विनम्र लोगों की, किसानों की, प्राकृतिक सौंदर्य की, रोचक इतिहास और अद्‌भुत संस्कृति की। इसी राज्य के जिला फेक की सुंदरवादियों में हीरे के समान चमकता हुआ एक गाँव है चिजामी, जो नारी सशक्तिकरण का अनूठा उदाहरण बनकर उभरा है।

चिजामी गाँव पूर्व नागालैण्ड के फैक जिले में स्थित है। इस गाँव में करीब 600 घरों को बस्ती है और सभी लोग कृषि से जुडे हैं। यहाँ नारी सशक्तिकरण और कृषि आधारित दीर्घ कालीन जीवनयापन पर काम किया जाता है।

चिजामी में कुछ गरीब और पिछड़ी महिलाएँ एक साथ मिलकर दुनिया के सामने यह मिसाल प्रस्तुत करती हैं कि कड़ी मेहनत और लगन से सब कुछ हांसिल किया जा सकता है और विकास को नई दिशा दी जा सकती है।

राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित गाँव तिलोनिया की सूरत और सीरत बदलने के लिये जो काम 1970 में एस बंकर राय ने प्रारम्भ किया वैसा ही कार्य सम्पादन करने के लिए 1994 में सुश्री मोनिसा बहल का चिजामी में आगमन हुआ।

मोनिसा बहल महिला अधिकार के लिए काम करती है। उन्होंने सबसे पहले कृषि के क्षेत्र में काम शुरू किया। फिर उन्होंने महिला स्वास्थ्य के लिए काम किया। वह यहाँ की महिलाओं से परिचित होने के लिए उनसे मुलकात करती और उनकी समस्याओं और जरूरतों को समझने का प्रयास करती थी।

यह उस समय की बात है जब नागालैण्ड साठ वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद मुख्यधारा में वापस आने का प्रयास कर रहा था।

इस दौरान मोनिसा बहल की हमसफर बनी सेनो नाम की नागा महिला। इसके अलवा एक शिक्षिका भी उनकी टीम की सदस्य बनी। इन सब ने एक साथ जुड़कर नागा महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाने की मुहिम शुरू की। चिजामी में इस विकास की यात्रा ने 2008 में गति पकड़ी।

यहाँ व्यवसाय के साथ स्थानीय परम्पराओं पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया। स्थानीय महिलाएँ चाहती थी कि उनको जीवनयापन करने के लिए बेहतर विकल्प मुहैया कराये जाए। इसके लिये यहाँ के हथकरधा को विशेष बढ़ावा दिया जाने का निर्णय लिया गया। यह सफर उस समय शुरू हुआ जब स्थानीय महिलाएँ बांस की लकड़ी से क्राफ्ट की चीजें बनाती थी। अब चिजामी में औसतन 300 महिलाएँ हाथ करधा उद्योग से जुड़ी हैं और कपड़ा बुनती है। चिजामी के साथ ही फेक जिले के दस गाँवों की महिलाएँ भी इस उद्योग से जुड़ गई है।

इसके साथ ही महिलाओं के अधिकारों से भी उनको परिचित कराया गया। हथकरघा के अलावा जैविक खेती, रूफटॉप वाटर हर्वेस्टिंग, स्वस्थ और स्वच्छता के बारे में भी उनको शिक्षित किया गया। महिलाओं के विशेष प्रशिक्षण के अंतर्गत उन्हें प्रशासन, नारी सशक्तिकरण और मानव अधिकारों के बारे में बताया गया।

2014 में यहाँ की महिलाओं में प्रशंसनीय बदलाव आया। यहाँ कि महिलाओं ने स्वयं की पहचान स्थापित की और प्रस्ताव पारित किया कि सभी कृषि मजदूरों को समान वेतन मिलेगा। 2015 में यहाँ की दो महिलाएँ इन्हुलुमी गाँव की पंचायत में चुनी गई।

हथकरघा से जुडे, कामगारों ने अपने व्यवसाय में विविधता का चलन बढ़ाया है और स्टोल, कुशियन कवर, बेल्ट, बैग्स, मफलर्स, कॉस्टर्स, टेबल मेट और रनर्स बनाना

भी शुरू कर दिया है। अपनी प्रोडक्ट्स को दिल्ली, कोलकत्ता, बैंगलुरू एवं मुम्बई में स्थित अपने एम्पोरियम में भेजते है जहाँ उन्हें अच्छी कीमत और माँग का फायदा मिलता है।

यहाँ कि महिलाएँ अपने संवेदनशील पर्यावरण को बचाये रखने के लिए बाजार आधारित जैव विधि कृषि की ओर भी आकर्षित हो रही है। चिजामी के विकास मॉडल को देखने और दीर्घकालीन जीवनयापन की विधि सीखने के लिए आने वाले लोगों का यहाँ आना जाना सदैव बना रहता है।

धोकडा (गुजरात)

जहाँ दूध बेचना अभिशाप है

धोकड़ा गुजरात राज्य के कच्छ जिले का एक गाँव है, जो श्वेत क्रांति के लिए प्रसिद्ध है। इस गाँव में दूध या दूध से बनने वाली वस्तुओं को नहीं बेचने की प्रथा का चलन है। जो लोग गाय, भैंस आदि नहीं पालते उनको दूध और दूध से निर्मित दही और छाछ (मठा) मुफ्त में दी जाती है।

5000 की आबादी वाले इसी गाँव में आम लोग पशु पालते हैं। ये पशुपालक अपनी जरूरत पूरी कर शेष बचे हुए दूध दही या छाछ को अपने गाँव या पड़ौसी गाँव वालों को मुफ्त में दे देते हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसा किसी उपकार या दया भाव से नहीं किया जाता है। इस परोपकार के पीछे एक प्रचलित अंधविश्वास है। एक पीर सौयदना 500 वर्ष पूर्व इस गाँव में बस गये थे। उन्होंने गाँव वालों को कहा कि अगर गाँव में सुख शांति और समृद्धि चाहते हैं तो दूध कभी मत बेचना । गाँव के लोग पीर की दरगाह के प्रति श्रद्धा भाव रखते हैं और उनके आदेश का पालन अभी भी करते है।

वहाँ के एक पूर्व सरपंच का कहना है कि कुछ वर्ष पूर्व एक गाँव वाले के जमाई (Son in Law) ने गाँव वालों की मर्जी के विपरीत दूध बेचना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों के बाद उसका निधन हो गया। इस दुर्घटना ने गाँव वालों के विश्वास को और पक्का कर दिया।

गाँव की सुख शान्ति के लिए इस प्रकार की परम्परा का निर्वहन भी तो परोपकार ही है।

धरनई (बिहार) सौर ग्राम

बिहार के जहानाबाद जिले का गाँव धरनई बौद्ध गया के नजदीक स्थित है। धरनई अब सौर ग्राम के नाम से भी जाना जाता है। देश के स्वतंत्र होने के सत्तर वर्ष बाद भी लाखों करोड़ो देशवासी रात के अंधेरे में जीवन व्यतीत करते हैं। केन्द्रीकृत ग्रिड प्रणाली लोगों की उम्मीद और आकांक्षाओं पर खरी उतरने में असफल ही रही है, खास तौर पर देहातों मे कुछ वर्ष पहले धरनई के लोग भी बिजली को तरसते थे, परन्तु अब नहीं।

करीब पाँच वर्ष पूर्व धरनई वासियों ने अपनी किस्मत को सदैव के लिए बदलने का जिम्मा अपने हाथों में लिया। ग्रीनपीस की मदद से सौर ऊर्जा आधारित एक माइक्रो ग्रिड स्थापित किया। यह संयंत्र अब निरंतर (24 x 7) बिजली की सप्लाई 450 घरों को और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को दे रहा है। मार्च, 2014 से धरनई अपने आपको अंधेरे से प्रकाश की ओर बढ़ता देख रहा है। इस परियोजना जिसकी लागत तीन करोड़ रूपये आई, ने धरनई को भारत का पहला सौर ग्राम बना दिया।

गाँव वाले कहते हैं कि हमने 30 वर्षों का लम्बा समय सरकार की मेहरबानी कि प्रतीक्षा में व्यर्थ में खो दिया। अब जाकर हमें मिट्टी के तेल की बत्तियों और महंगे डीजल से निजात मिली है। औरतें रात के समय घर से बाहर बिना संकोच के निकल सकती है और घर मे बैठकर बच्चे अपनी पढ़ाई कर सकते हैं और टी.वी. का आनन्द ले सकते है। 100 KW की क्षमता वाले माइक्रोग्रिड से 70 KW का उपयोग इलेक्ट्रिक जनरेशन के लिए और 30 KW से पीने के पानी के पम्पिंग सिस्टम को संचालित किया जाता है।

अक्षय ऊर्जा माइक्रोग्रिड स्थापित करने से गाँव में बेहद सुविधा मिली है। घरेलू उपयोग, कृषि व्यवसाय और सामाजिक बुनियादी ढाँचे में सरीक स्कूल, आंगनबाडी और

स्वास्थ्य केन्द्र को निर्बाध सुरक्षित और गारण्टीड सुधा विद्युत सप्लाई मुहैया कराई जा रही है। विद्युत उपलब्धता के कारण धरनई की आर्थिक स्थिति में जाहिर तौर पर प्रगति हुई है। आर्थिक और व्यवसायिक गतिविधियाँ बढ़ गई है। NH 80 के साथ लगे हुए व्यवसायिक क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ गई हैं और देर रात तक चलती हैं। खोमचे वालों की आय बढ़ी है। सस्ती बिजली उपलब्ध होने की वजह से लोगों की जेब (पोकेट) पर भी भार कम हुआ है। और औद्योगिक गतिविधियाँ भी बढ़ी है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सौर ऊर्जा की उपलब्धता के मद्देनजर धरनई का भविष्य बेहतर और प्रकाशवान नजर आता है।

अब तो कहावत बन गई है कि धरनई वह गाँव है जहाँ सूर्य कभी अस्त होता ही नहीं है। यह गाँव आशा और आकांक्षाओं का प्रतीक बन गया है। समय की मांग है कि धरनई अपने प्रकाश की किरणों का विकेन्द्रीकरण करें और वैश्विक मॉडल का रूप धारण करें और नई सम्भावनाओं का प्रदर्शन करें। जब से धरनई को ऊर्जा की उपलब्धता के मामले में आत्मनिर्भर घोषित किया है तब से यह गाँव अपनी वैबसाइट "Dharnai live" चलाकर अन्य गाँवों को और सरकार को प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है। समय की मांग है कि अधिक से अधिक गाँव आगे आएँ और धरनई मॉडल का अनुसरण कर अपने गाँव को समृद्धशाली बनायें।

धनूरी (राजस्थान)

शहिदों वाला गाँव

राजस्थान का शेखावटी क्षेत्र सैन्य सेवा और शहादत के लिए जाना जाता है। यहाँ के सीकर, चूरू और झुंझुनू जिलों में ऐसे हजारों परिवार है जिनका कम से कम एक सदस्य देश की रक्षार्थ सरहद पर तैनात रह दुशमन से मुकाबला कर चुका है। झुंझुनू जिले का गाँव धनूरी शहादत के लिए जाना जाता है।

धनूरी गाँव की मिट्टी में देश प्रेम की भावना प्रबल है। यह एक मुस्लिम बाहुल्य गाँव है जो सैन्य सेवा, देश प्रेम और बलिदान के लिए विख्यात है। यह गाँव अपने सैकड़ों सपूतों को सरहद पर भेज चुका है। वर्तमान में करीब 300 लोग सुरक्षा सेनाओं में सेवारत और इतनी ही संख्या में पूर्व सैनिक अपने गाँव की खुशहाली के लिए अपनी सेवाएं दे रहे है। धनूरी के सपूतों ने जंगे मैदान में दुश्मन को करारा जवाब दिया है। पाकिस्तान तो इनसे कतराता है और इनके देश प्रेम के जज्बे को सलाम करता है।

यहाँ के अनेक परिवार है जिनकी पाँच-पाँच पीढ़ियों का वास्ता सैन्य सेवा से रहा है। यहाँ के स्कूली बच्चों का सपना होता है कि वे अपने पूर्वजों की परम्परा का सम्मान करते हुए सेना में जाऐं और देश को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए जरूरत पड़ने पर जान की बाजी लगा दें। धनूरी के लिए यह गर्व की बात है कि यहाँ के 17 सैनिक हमारे देश के लिए शहीद हो चुके हैं। उनकी गौरव गाथाएँ यहाँ के घरों में सुनाई जाती है।

प्रथम विश्वयुद्ध से लेकर कारगिल और अन्य सैनिक अभियानों में यहाँ के सैनिक शरीक हुए हैं। आतंकवादियों के नापाक इरादों को नेस्तोनाबूद करने में धनूरी के रणबांकुरों ने अहम भूमिका निभाई हैं। आतंकी हमले से 50 अमरनाथ यात्रियों को सुरक्षित बचा लाने वाला बस ड्राइवर सलीम भी इसी धरा का सपूत था। सामाजिक सौहार्द की भी यह गाँव अनूठी मिसाल प्रस्तुत करता है। हिन्दू मुस्लिम भाईचारे की नींव बहुत गहरी है। यह गाँव साम्प्रदायिक तनाव से पूर्ण रूपेण मुक्त है।

लोगों की यह पीड़ा जरूर है कि जब कोई हमारा भाई या सपूत शहीद हो जाता है तो इतना अफसोस नहीं होता है जितना शहिदों के परिवार वालों को या जंग में अपाहिजों और रिटायर्ड फौजियों को अपने हक के लिए दफ्तरों की खाक छाननी पडती है तब होता है। सरकारी महकमों की लालफीताशाही और बेरूखी से वे काफी परेशान है। **(क्रमशः)**

अपनी बात

समर्पित होकर किसी कार्य में ही लगे रहने वाले व्यक्ति को देखकर कई बार लोग चर्चा करते हुए दिखाई देते हैं कि यह व्यक्ति सुखी है या दुखी। अर्थात् समर्पित होकर कार्य करने में सुख भी मिलता है क्या, या दुख भी आता है क्या? क्षत्रिय युवक संघ में कार्यरत समर्पित स्वयंसेवकों के लिए भी ऐसे प्रश्न उठते रहते हैं। यह प्रश्न इसलिये उठता है कि समर्पित स्वयंसेवक अपनी व्यथा के कारण हर समय कर्मरत दिखाई देता है, अतः लोग स्वभावतः सोचते हैं कि कहीं ये अपनी पीड़ा में ही डूबे रहते हैं शायद।

समर्पित व्यक्ति की स्थिति एक भक्त जैसी होती है। भक्त विरह अवस्था में रहता है तो प्रश्न उठता है वह विरह अवस्था में दुखी होता है या सुखी? वास्तव में वह दुखी भी होता है, सुखी भी होता है। भक्त की विरह-अवस्था बड़ी विरोधाभास की अवस्था है। वह दुखी होता है क्योंकि परमात्मा मिलता-मिलता लगता है पर अभी मिला नहीं। आती-आती लगती है उसकी पद्ध्वनि, अब आया तब आया और मिलन अभी हुआ नहीं। स्वाद लग गया है मगर स्वादिष्ट सागर अभी मिला नहीं।

दुखी होता है मगर सुखी भी होता है क्योंकि वह धन्यभागी है। परमात्मा की चाह प्राप्त होना भी कहाँ होता है। वह तो किन्हीं धन्य भागियों के जीवन में ही होता है। वह लौटकर औरों की तरफ देखता है तो अपने आपको सुखी पाता है कि परमात्मा के लिए कम से कम रो रहा हूँ। उनसे तो धन्यभागी हूँ जो रुपए-पैसे के लिए रो रहे हैं, पद-प्रतिष्ठा के लिए रो रहे हैं। उनसे तो धन्यभागी हूँ। इस संसार के कष्ट मालूम नहीं होते और न संसार की प्रतिष्ठा उसे प्रतिष्ठा मालूम होती है।

समर्पित स्वयंसेवक की भी यही स्थिति रहती है। वह पीड़ित है समाज की वर्तमान स्थिति के कारण। इसलिए सदैव कर्मरत रहता है, पर समाज की स्थिति में अपेक्षित परिवर्तन नहीं नजर आता। इसलिए अपनी पीड़ा से पीड़ित ही रहता है। परन्तु जब देखता है संसार के लोगों को, कि ये लोग अपने कर्तव्य को भूले हुए समाज की पतनावस्था के बारे में विचार तक नहीं करते और सांसारिक पदार्थों, धन-दौलत, पद आदि प्राप्त करने में ही लगे हुए हैं तो थोड़ा स्वयं के कर्तव्य मार्ग पर आ जाने की अवस्था से सुखी भी होता है। इसलिए आने वाली अन्य सांसारिक चिन्ताओं से दुखी नहीं होता। कर्तव्य मार्ग की सहज क्रियाएँ मानकर कर्म में लगा ही रहता है।

एक भक्त अपने आपको संसारियों से तोले तो भक्त महासुखी है। लेकिन वह भक्त सिद्धों से तोले तो निश्चित ही दुखी होगा। जैसे-जैसे भीतर शून्य इकट्ठा हुआ है, वैसे-वैसे पूर्ण की अभीप्सा भी गहरी हो जाती है। फिर एक ही स्वर उठता है- मिलो, मिलो। यही स्थिति सामाजिक कार्यकर्ता की होती है। संगठन बढे, सभी का समर्पण बढ़े, जागृति विस्तार पाए। यही उसकी पुकार बन जाती है। जितनी सफलता मिलती है, उतनी ही आकांक्षा जागृत होती रहती है। वह तो पीड़ा है, पर जो मिला है, उतनी भी मेरे कर्म की, मेरी पात्रता नहीं थी, पुण्य नहीं था, यह धन्यभागी होने का सुख है। प्यास बढती है, अतृप्ति और सघन होती है तब और अधिक सक्रियता ही चाहत बनी रहती है। पीड़ा भी है तो सुख भी है।

●

संघ बंधु भगवान सिंह रावलगढ़ (बेलवा) का तृतीय श्रेणी अध्यापक बनने पर हार्दिक बधाई

भगवान सिंह रावलगढ़ (बेलवा)

राजस्थान राज्य मेरिट में 62 वाँ तथा
जोधपुर जिला मेरिट में 4 वाँ स्थान

-: शुभेच्छू :-

गजेन्द्र सिंह देणोक , भोम सिंह बेदु 2nd, जसवंत सिंह चाबा, हरि सिंह ढेलाणा, करणीपाल गाँवडी , राजेन्द्र सिंह बामणु , सुरेन्द्र सिंह रुद , जेठु सिंह सिड्डा , गुलाब सिंह बस्तवा, गंगा सिंह बेरसियाला , भोम सिंह सेतरावा , गोकल सिंह अमृतनगर, देवी सिंह बेलवा , भैरू सिंह चाबा, दिलावर सिंह केतू , समुन्द्र सिंह आचिना, चैन सिंह सेतरावा, गोविन्द सिंह पांचला , नरेन्द्र पाल सिंह खिरजा, जबर सिंह बापिणी (महाराणा प्रताप एकेडमी, जोधपुर)

मेवाड़ वागड़ सम्भाग

जालौर सम्भाग

नागौर सम्भाग

बीकानेर सम्भाग

की ओर से
पूज्य तन सिंह जी के

शताब्दी समारोह

में उपस्थित रहे सभी समाज बन्धुओं व दिन रात सहयोगी बन कार्यक्रम को सफल बनाने वाले संघ बन्धुओं को कार्यक्रम की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।।

मार्च, सन् 2024
वर्ष : 61, अंक : 03

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह